दिनेश-दर्शन

सूर्यकुमार पाण्डेय 'दिनेश'
गर्गाश्रमी

प्रकाशक :-
श्री हिन्दी-साहित्य-मण्डल
कानपुर।

मूल्य २) रुपया

मुद्रक :-
सुमन प्रेस
शतरंजी मोहाल, कानपुर।

समर्पण

हिन्दी हिन्दू हिन्द देश हित,
जिनका जीवन अर्पण है ।
जिनके लिए स्वत्त्व पर मरना,
साधारण - संघर्षण है ॥
सुदृढ़ - संगठन शुद्धि - कार्य ही,
जिनका संध्या - तर्पण है ।
जाति - जाह्नवी का जल जिनके-
लिए अस्त्र - अघमर्षण है ॥
कलित कामिनी का वर्णन भी,
जिनको सुधा - प्रवर्षण है ।
जिनके चारु चित्त - चुम्बक में,
अद्भुत् प्रेमाकर्षण है ॥
जिनके विमल विचार और,
अन्तस्तल निर्मल दर्पण है ।
उन्हीं सदय सुहृदों को सादर,
प्रस्तुत् ग्रन्थ समर्पण है ॥

—सूर्यकुमार पाण्डेय 'दिनेश'
गर्गाश्रमी

❁ प्रेरणा ❁

श्रीमुख हेरि गजानन का, मन,
मोद विनोद* मनाने लगा है।
छन्द प्रबन्धन में प्रतिभा का,
पुनीत प्रभात† सुहाने लगा है ॥
बुद्धि विवेक में दिव्य प्रकाश,
दिवाकर× सा दरसाने लगा है।
मञ्जु मनोहर भावन में,
रतनाकर‡ त्यों लहराने लगा है ॥

—'दिनेश'।

उपरोक्त छन्द के चरणों में प्रयुक्त विनोद*, प्रभात† दिवाकर× और रतनाकर‡ शब्द, क्रमशः मेरे चारों पुत्रों के नाम भी हैं। जिन्होंने इस पुस्तक को मुद्रित कराने के लिए मुझे विशेष रूप से बाध्य किया है।

—दिनेश।

उपहार

....

....

....

दल-तुलसी के लीजिए, मेरे यह उद्गार।
स्वीकृत कीजे सुमन मन, सब अपराध बिसार॥

—'दिनेश'

।। कृतज्ञता-ज्ञापन ।।

प्रस्तुत पुस्तक के मुद्रण-कार्य में हमारे परम स्नेही मित्र

आचार्य पं० श्यामविहारी शर्मा "विहारी"

जी ने जो सतत् योग-दान दिया है, उसके

लिये मैं हृदय से उनका आभारी हूँ।

— तथा —

अपने कुल-गुरु एवं बाल्य-मित्र कविवर

पं० अवधबिहारी जी मालवीय 'अवधेश'

के प्रति भी, उनकी प्रेरणात्मक-सद्भावनाओं के

लिये अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

—'दिनेश'।

पं० सूर्यकुमार पाण्डेय "दिनेश"

गर्गाश्रमी

जन्म सं० १९५०   फोटो सं० १९८५

परिचय

दोहा

रायबरेली का जिला, अवध प्रान्त सरनाम ।
खण्ड बैसवारा बिदित, गर्गाश्रम शुभ ग्राम ॥
कान्यकुब्ज-कुल श्रेष्ठ, वर-विप्र-बंश विख्यात ।
पाण्डेय शुचि आसपद, षट्कुल में प्रख्यात ॥
श्रीयुत पण्डित लालमणि, पूज्य पिता को नाम ।
मेरा सूर्यकुमार अरु, है 'दिनेश' उपनाम ॥
विक्रमीय सम्वत् सुखद, उन्निस सौ पंचास ।
दीपावलि शुभ जन्मतिथि, शरद कारतिक मास ॥

* जन्म स्थान (ग्राम) की महत्ता *

कवित्त

सिंह-वाहनी हैं मातु संकटा भवानी जहां,
संकट सँहारतीं सप्रीति ध्यान लाने पर ।
भारती स्वरूपा हैं अनूपा पुण्यपूता गंग,
जिनके प्रताप से तृ-ताप पाप जाते हर ॥
आश्रम पुनीत है मुनीश गर्ग जी का जहां,
राजते 'दिनेश' हैं तृ-देव ये निराले वर ।
शूलपाणि वाले आशुतोष मतवाले शम्भु,
काटते कसाले हैं महेश मुण्डमालेश्वर ॥

द्रष्टव्य :—

मीठे खट्टे चरफरे, तीखे औ नमकीन ।
व्यञ्जन विविध प्रकार के, छन्दन के रस लीन ॥

सूधी-सूधी बतकही, सूधे-सूधे भाव ।
तौहूं रुचैं न छन्द जो, तो यह बुद्धि प्रभाव ॥

—दिनेश ।

दो शब्द

" कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः "

कवि और कविता—दोनों शब्द, ब्रह्म और माया के नाम-रूप हैं। ब्रह्म कवि है और माया (प्रकृति) कविता है। मायारूपी अद्भुत् एवं मनोहारी कला को ही देख सुनकर, मानव अपनी कल्पना के अनुसार जो अनुभूति चमत्कारिक वाक्यों द्वारा वर्णन करता है, उसी को कविता के नाम से सम्बोधित होने की रूढ़ि पड़ गई है। इसी प्रकार 'चित्रकला' किंवा 'चित्रकाव्य' को भी विद्वान् काव्याचार्यों ने कविता का अङ्ग माना है। गीत, संगीत और गद्य-पद्यात्मक बाणी की शैली से उसे विविधि छन्द-रूपों में विभाजित करके कवि अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करता है। रस, अलंकार, ध्वनि, प्रास और ओज आदि का समावेश करके, रचनाओं को सजाता हुआ मनोरम एवं हृदयग्राही बनाता है। मेरी समझ और सम्मति में यही मानव-कृत कविता है। सम्भव है, सुयोग्य विद्वत्-समाज मेरी उपरोक्त धारणा से सहमत न हो।

रीतिकाल के पश्चात् इधर कई दशाब्दियों से भारतदेश में हिन्दी कवियों और कविताओं की दिनोदिन पुनः अभिवृद्धि हो रही है। हिन्दी साहित्य में जिस गति से उसका विकास हो रहा है, वह किसी सीमा तक स्तुत्य तथा संतोषप्रदायक है।

किन्तु, जहां यह गौरव की बात है, वहीं "वाद" के वितण्डावाद से कवि—समाज में जो कीचड़ उछाल होती दिखाई देती है—वह चिंता का विषय है। छायावाद, रहस्यवाद, प्रकृतिवाद एवं खड़ी बोली, ब्रजभाषा, संस्कृत गर्भित क्लिष्ट भाषा आदि के विवादों को लेकर नाना प्रकार की आलोचनाएँ द्वन्दात्मक भावों का सृजन करती हैं, जोकि लोक कल्याण के हित में बाधक हैं।

मेरी दृष्टि और सम्मति में कोई 'काव्य' अथवा 'वाद' उपेक्षणीय नहीं है। बशर्ते–कि वह सर्व साधारण की समझ में सरलता से आजाने योग्य हो। रचनाओं में जहां तक छन्दों की उपयोगिता का प्रश्न है ! वहाँ महाकाव्य या खण्डकाव्य में जिस प्रकार मुक्तक-छन्दों से यथार्थ पूर्ति नहीं हो पाती, उसी प्रकार किसी विषय अथवा बात को "सूत्र" रूप में प्रतिपादित कर देने के लिये लम्बे चौड़े गीत-छन्दों से उतना काम नहीं सधता, जितना कि मुक्तकों से। गीत-छन्द पढ़ने या कहने के लिये सुरीला-कण्ठ ताल-स्वर-ज्ञान और वाद्य-यंत्र अपेक्षित हैं। मुक्तक-काव्य इससे मुक्त और युक्त दोनों है। मुक्तक-छन्द अभीप्सित-इष्ट को एक ही श्वास में सिद्ध कर देता है। लक्ष्य को तीर-सा वेध देता है। अतः अपने अपने स्थान पर दोनों ही ग्राह्य और सम्मानीय हैं।

मेरे जैसे तुक्कड़ों के लिये कवि बनने का दावा करना उपहासास्पद है और जोड़-गांठ की तुकबन्दियों के बल पर साहित्यिक अथवा साहित्यसेवी होने का अभिमान करना निरी

धृष्टता है। उत्कृष्ट और गम्भीर साहित्य के सम्मुख "नक्क़ार-खाने में तूती की आवाज़" की तरह ही यह रचनाएँ नगण्य हैं। फिर भी, यह सर्वथा अनुपयोगी एवं व्यर्थ हैं ? ऐसा नहीं है। समझदार-अपढ़, साधारण-जनता और साधारण–शिक्षित वर्ग को इनसे प्रेरणा मिल सकती है। किसी स्थान पर एकत्र काव्य-कथनीकों की गोष्ठी में जब जवाबी-होड़ लग जाती है तो मुक्तक-छन्द अपनी 'आतशबाज़ी' से श्रोताओं में चकाचौंध पैदा कर देते हैं। हास्य और व्यंग से हृदय को आन्दोलित कर देते हैं। शृङ्गार की सुषमा से अन्तरोल्लास को विहँसित कर देते हैं। नीति या उपदेश से अपना प्रभाव इन्जेक्शन की भाँति सीधा अन्तःकरण में प्रविष्ट कर देते हैं। इस प्रकार मेरी सम्मति में गीतों की अपेक्षा मुक्तकों की उपादेयता कम नहीं है। समाज का साहित्यिक-स्वास्थ्य सुधारने के लिए यदि गीत या अन्य छन्द 'कल्प' की भांति लम्बे चौड़े उपचार हैं, तो मुक्तक सहज और सरल एवं सुलभ, बिना अनुपान की "अक्सीर-औषध" हैं। इसमें सन्देह नहीं। अस्तु, छन्द और भाषा तथा वादों के वितण्डावाद में न पड़कर, मैं हिन्दी साहित्य के सभी पवित्र रूपों की सराहना करता हूँ।

"दिनेश-दर्शन" कोई खण्डकाव्य या महाकाव्य ग्रन्थ नहीं है। 'दिनेश' उपनाम से कृतियां लिखने के कारण इसका नाम-करण "दिनेश–दर्शन" के नाम से किया गया है। समय २ पर लिखी गई मेरी विविध-विषयों की कृतियों (अधिकांश समस्या पूर्तियों) का यह संग्रह मात्र है। चूँकि प्राकृत रूप से मुझे संगीतज्ञ हो सकने का सामर्थ्य प्राप्त नहीं हो सका, अतः

कवित्त और सवैया आदि ही लिखने में विशेष अभिरुचि रही। संसार और स्वदेश की सामाजिक, राजनीतिक परिस्थिति, एवं तत्कालीन वातावरण तथा घटनाचक्र से जब जैसी अनुभूति होती रही, उन्हीं उद्गारों का दर्शन इस पुस्तिका के छन्दों में है। साथ ही काव्य परम्परा के अनुसार कुछ शृङ्गारिक वर्णन भी है, जो कि पूर्ववर्ती कवि महानुभावों के भावों का अनुकरण ही है। यद्यपि मैंने अपने मौलिक भावों और विचारों को ही छन्द-बद्ध करने का प्रयास किया है। काल्पनिक उड़ानों की अपेक्षा स्वाभाविक दृश्य-भावों का वास्तविक चित्रण करना ही प्रथम ध्येय माना है। तुकांतों को भरती के शब्द होने से भरसक बचाया है। भाषा तथा मुहावरे को सुबोध रखने का प्रयत्न किया है। अधिक तोड़ मरोड़ के साथ शब्दों के दुर्बोध तद्भव रूप को अपनाने की चेष्टा बहुत कम की है। तथापि अन्य महान कवियों की भावनाओं किम्बा कल्पनाओं का यत्रतत्र छायाभास होना सम्भव है। क्योंकि उनसे कोई कल्पना या विषय अछूता नहीं छूटा।

कतिपय छन्दों में हिन्दी भाषा के अतिरिक्त उर्दू फ़ारसी के शब्दों का भी प्रयोग विषय अथवा प्रसंगवश करना पड़ा है। व्रजभाषा, अवधी और खड़ीबोली में समान श्रद्धा होने के कारण मेरी कृतियों में सभी का सम्मिश्रण है और तत्सम, तद्भव एवं देशविशेष में बोले जाने वाले शब्दों का प्रयोग है। आशा है, उदार—पारखी इसे दोष मानकर उपेक्षा की दृष्टि से न देखेंगे। इन कृतियों से कवितापे्रमी सुजनों का कितना हित और मनोरंजन हो सकेगा ? यह तो उन्हीं के विचारों पर

निर्भर है। निर्गन्ध अथवा सुगन्धित सुमनों का यह श्रद्धांजलि स्वरूप "दिनेश-दर्शन", सहृदय पाठकों को सादर समर्पित है। अपनाना या ठुकराना उनका कर्तव्य है। क्योंकि—

"जूंठे अनूठे भरे रस भाव के,
छन्दन को यह चन्दनहार है।
भाषा सुबोध पुरातन नूतन, सों—
विरच्यों यह बन्दनवार है॥
प्रेमिन को पहिनाइबे की,
अभिलाष 'दिनेश' हिये में अपार है।
रीझिबो बूझिबो खीझिबो तो,
प्रिय पाठकों की रुचि के अनुसार है॥"

॥ इत्यलम् ॥

दीपावली
सं० २०१८ वि०

सूर्यकुमार पाण्डेय 'दिनेश'
गर्गाश्रमी।

* वीणा-वादिनी *

सोहै साज-बाज साज, सुरन समाज बीच,
शोभा हेरि-हेरि हीय हरि को हरकि जात ।
शेष औ गणेश त्यों 'दिनेश' अमरेश आदि,
आनन-निशेश पेखि पारा सों ढरकि जात ।।
वीणा-पाणि ज्योंही तार वीणा के बजावै त्योंही,
ताल पै उताल व्है त्रिलोचन थरकि जात ।
ज्योतिमान ज्योति-सी विलोकि जलजासन पै,
आसन पद्मासन को बाँसन सरकि जात ।।

* शंभु-नृत्य *

छाजत तृपुण्ड भाल राजत है मुण्डमाल,
डमरू डिमिकि-डिम बाजत सु-ताल में ।
कर में त्रिशूल शारदूल-चर्म सोहै कटि,
मोहै जूट-जाल छूट छहरि छटान में ।।
देखत 'दिनेश' देव किन्नर निमेष हीन,
व्योम ते विचित्र वेष बैठि कै विमान में ।
भूत प्रेत भृङ्गी साथ नाग बहुरंगी गाथ,
नाचत त्रिलोकीनाथ शंकर मसान में ।।

दिनेश-दर्शन

श्रीः

पितराञ्जलि

(सवैया)

चाह का चन्दन, आह के अक्षत,
योग वियोग समीकरणों में ।
प्रेम के पुष्प, विलोचन वारि,
तिलोदक रूप उदाहरणों में ।।
है तुलसीदल भक्ति 'दिनेश' त्यों,
है कुश क्लेश, स्वधा वरणों में ।
हे पितु मातु ! समर्पित है यह,
अञ्जलि आपके श्री चरणों में ।।

—दिनेश ।

शास्त्रानुसार पितरांजलि की सात वस्तुएँ १ चन्दन (चाह) २ अक्षत (आह) ३ पुष्प (प्रेम) ४–५ तिल और जल (विलोचन वारि, आंसू) ६ तुलसीदल (भक्ति) ७ कुश (क्लेश) स्वधा नमः (छन्द के वर्ण)

॥ श्रीहरिः ॥

दिनेश-दर्शन

* वन्दना *

श्री गणपति गौरी गिरा, ऋद्धि सिद्धि जगदीश ।
इष्टदेव ग्रह गुरु पितर, चरण कमल धरि शीश ॥
विनय करौं करजोरि युग, बारबार शिर नाय ।
करहु मनोरथ सफल मम, सकल विघ्न विनशाय ॥

× × × × ×

तिल-तिल में जो व्याप्त है, अलख रूप अभिराम ।
आँखों के तिल में बसे, वही श्याम घनश्याम ॥

(सवैया)

हे गण नायक सिद्धि प्रदायक,
दास 'दिनेश' की ओर निहारो ।
कोर कृपा की करो करुणानिधि,
विघ्न हरो भव-भीर निवारो ॥
हो अवलम्ब तुम्हीं इक नाथ,
विलम्ब बिना गहि हाथ उबारो ।
मों मतिमन्द को आनँदकंद,
करो निरद्वंद औ छंद सँवारो ॥

विश्व-विधायक, गायक की, अधि–
नायक, पायक की महरानी ।
कौन गुणावली गाऊँ 'दिनेश'
अशेष गुणों से भरी वरदानी ॥
तार दे पार उतार दे सिन्धु के,
हौं अति अज्ञ अकिंचन प्रानी ।
दे पतवार गहाय कवित्व की,
शारदे मातु ! प्रसार दे बानी ॥

× × × × ×

राधिका श्याम रटै रसना,
फँसना से हटै यह जीवन मेरा ।
बावरे कान सुनैं मुरली धुनि,
साँवरे रंग रँगै तन मेरा ॥
आनन-इन्दु 'दिनेश' लखैं दृग,
प्रानन के धन हों धन मेरा ।
देवकी नन्दन के पद कंजन, में,
बन भृंग बसै मन मेरा ॥

× × × × ×

(छप्पय)

जो भक्तों का भक्त, नवल नेही नटनागर ।
मुनियों का आराध्य-देव, यदुवंश उजागर ।।
जो मन-मानस-हंस, सर्व गुण गरिमा आगर ।
लीलामय अखिलेश, शांति सुषमा सुख सागर ।।
व्रज वनिताओं का सदा जो प्यारा प्राणेश है ।
उस व्रजेश-राकेश हित बना चकोर 'दिनेश' है ।।

(कवित्त)

जौन हैं खेवैया भव-सिन्धु बीच नैया, और–
जौन हैं हरैया सदा दारुण कलेश के ।
विमल करैया बुद्धि, वाणी के देवैया जौन,
ज्ञानी के हिये में जो बसैया हैं हमेश के ।।
विघन नशैया हैं, दरैया दुःख दारिद के,
जौन हैं कन्हैया बने कोविद 'दिनेश' के ।
बन्दउँ सदैव सोई पावन पदारविन्द,
गुरु के गिरा के गौरिनन्दन गणेश के ।।

× × × × ×

कल्पना-कलाप में विशुद्ध भावना का भास,
होता आतमा में शांति सुखका निवास है ।
दीप्यमान होता ज्ञान-दीपक 'दिनेश' दिव्य,
होता मूढ़ता के तीव्र-तम का विनास है ।।
विश्व-वाटिका में व्यक्त विभु की विभूति होती,
कवि की कला में कलाधर का प्रकाश है ।
होती सभी बात है तभी ऐ मातु वीणापाणि!
होता जब तेरा बुद्धि वाणी में विकास है ।।

× × × × ×

आती मातु तेरी मंजुमूर्ति जब मानस में,
मेरी तंत्रिका के तार-तार हिल जाते हैं ।
कान्त-कल्पना के भव्य-भावों को सजाते हुए,
शब्दों के समूह-भेद भेद दिल जाते हैं ।।
रस बस जाते हैं 'दिनेश' रसना में नवो,
भूषण अशेष अनायास मिल जाते हैं ।
छन्द बन बाणी के स्वच्छन्द काव्य-कानन में,
कमनीय कुसुम समान खिल जाते हैं ।।

× × × × ×

बालमीक व्यास सूर तुलसी मयूर माघ,
कालिदास केशव विहारी मतिराम है ।
देवदास ग्वाल गंग चन्द हरिचन्द बेनी,
भूषण प्रवीण पदमाकर ललाम है ।।
कादिर कबीर त्यों रहीम रसखानि मीरा,
ठाकुर 'दिनेश' तोष वृन्द कवि नाम है ।
ऐसे कविराजन की खानी जन्मदानी जौन,
सोई सुखदानी जन्मभूमि को प्रणाम है ।।

(सवैया)

भाल में बाल-मयंक लसै अरु,
गंग की धार जटान में धारे ।
वाम विराज रहीं गिरिराज–
सुता सब साज सिंगार सँवारे ।।
दिव्य दिगंबर-वेष 'दिनेश',
लिए डमरू कर शूल सँभारे ।
हे हर साम्ब सदाशिव शंकर,
शीघ्र हरो मम संकट सारे ।।

× × × × ×

(२)

तारे अनेक गुनी अगुनी,
गुन दोष 'दिनेश' न नेकु निहारे ।
कोटिन दीन दुखीनन के,
भरि दीन दया करि भूरि भँडारे ।।
मों सम नीच नराधम के बस,
नाथ तुम्हीं इक हो रखवारे ।
पाहि प्रभो शरणागत-पाल,
कृपाल विपत्ति विदारन हारे ।।

(३)

जन्म भयो जबसों जग में,
तबसों धन धामहि की धुनि धारे ।
दौरत श्वान समान रह्यों,
कबहूं नहिं पुण्य औ पाप बिचारे ।।
सूझि परी सो करी सिगरी पै,
'दिनेशजू' व्याधि टरी नहिं टारे ।
हारे उपाय सबै करिकै अब,
नाथ निवाह है हाथ तिहारे ।।

× × × × ×

पाप-पहार को लादि चल्यों,
जिय सोच है नाथ कहांलौं सँभारिहैं ।
भार अपार है झांझरि नाव,
बचाव को कौन उपाव निकारिहैं ।।
है दृढ़ आश 'दिनेश' तऊ प्रभु,
कौनिहुं भाँति कलेश निवारिहैं ।
बोरिहैं बांधिकै वारिधि में,
अथवा कर साधिकै पार उतारिहैं ।।

× × × ×

विनती है 'दिनेश' यही तुमसे,
तव दास हो नाथ गुजारा करूँ ।
तन के त्रय-तापन को तुम्हरी,
छवि-छांह में बैठि निवारा करूँ ।।
धन औ जन जीवन प्रान सबै,
सुख मान तुम्हीं पर वारा करूँ ।
मन-मोर को चारु चकोर बना,
मुख चन्द तुम्हारा निहारा करूँ ।।

+ × × × ×

(दोहा)

यदपि होन के जोग नहिं, तव-सेवक-पद-छार ।
तदपि चरण-रत नित रहौं, हे प्रभु करुणागार ।।१
जीवन-तरणी झांझरी, बिनु केवट पतवार ।
परी भँवर-भव-सिंधु में, खैंचि लगादो पार ।।२
जांचूं किसको कौन है, अन्य निवाहन हार ।
अशरण शरण दयालु तुम, हो सबके आधार ।।३
बिनु विचार विनु जांच के, विनु विलम्ब गहि हाथ ।
पार करो मुझ दीन को, दह से दीनानाथ ।।४
बल बुधि विद्या धन नहीं, तन जर्जर मन खीन ।
इस विपन्न-गति में ग्रसित, हौं तेरे आधीन ।।५

(छप्पय)

होवे बुद्धि-विकास, नाश हो मूरखता का ।
बढ़े प्रेम सहयोग, चढ़े रँग निर्भयता का ।।
फैले ज्ञान-प्रकाश, मान हो मानवता का ।
चूर-चूर हो दर्प, दुष्टता दानवता का ।।
यों 'दिनेश' हर हृदय से, उमड़े आनँद की लहर ।
प्लावित सारा विश्व हो, देहु नाथ अस अमर वर ।।

माता का महत्व

(छप्पय छन्द)

(१)

है वसुधा की सिद्धि-अष्ट, नव-निधि की खानी ।
सत्य-शक्ति प्रत्यक्ष-ज्योति लक्ष्मी वरदानी ॥
देवी शांति-स्वरूप वत्स-वत्सल सुखदानी ।
सरल सौख्य-संतोष-शील-शालिनि कल्यानी ॥

यों 'दिनेश' अखिलेश से श्रेष्ठ मातु सम्मान है ।
सर्वोपरि संसार में जननी जन्मस्थान है ॥

(२)

गर्भ राखि नव मास, तासु गति क्या होती है ?
पाती कष्ट अपार, नहीं फिर भी रोती है ॥
सूखे सुतन सुलाय, स्वयं गीले सोती है ।
नाक थूक मल मूत्र, हाथ अपने धोती है ॥

लालन पालन स्वास्थ्य हित करती बहु उपचार है ।
सन्तति सुख लखि भूलि दुख हो जाती वलिहार है ॥

(३)

करती कुल गृह काज बना भोजन देती है ।
आती जो आपत्ति उसे निज शिर लेती है ।।
सदाचार व्यवहार नीति शिक्षा जेती है ।
सिखलाती करि प्रेम यही उसकी खेती है ।।

संतति अच्छी या बुरी सब पर प्रीति समान है ।
ऐसी माता से कभी नहीं उऋण सन्तान है ।।

अनुराग-विराग

(गीत)

प्रेम ही है जीवन में प्राण ।

प्रेम-तंत्र से खुल जाते हैं, दम्भ द्वेष षड्यंत्र ।
दृढ़ बंधन ढीले पड़ जाते, ऐसा मोहन-मंत्र ॥
सृष्टि का करता है कल्याण । प्रेमही····

सुर किन्नर योगी भोगी अरु, असुरादिक यमदूत ।
मनुज–शक्ति अस्तित्व रखे क्या, हो जाते वशभूत ।
पिघल जाता कठोर पाषाण । प्रेमही····

संसारी–पथिकों के लगते, पग पग पर जो शूल ।
प्रेम-पंथ में हो जाते हैं, वेही कोमल फूल ॥
त्रसित पाजाते दुख से त्राण । प्रेमही····

हिंसक क्रूर जंतु जिनका है, स्वाभाविक गुण वैर ।
भक्तिपूर्ण श्रद्धांजलि लेकर, आकर चूमें पैर ॥
वृथा जाते वधिकों के बाण । प्रेमही····

है 'दिनेश' परमेश विश्व में, व्यापक प्रणय स्वरूप ।
अंतर-पट में अंकित करलो, वही मनोहर रूप ॥
प्रेम–मंदिर करलो निर्माण ।
प्रेमही है जीवन में प्राण ॥

× × × × ×

(कवित्त)

काय-कष्ट पाते कण्ठ संतत झुकाते कहीं,
चकित चकोर चन्द्र ओर दृष्टि लाते क्यों ।
विकल पतंग यदि अनल विचारते तो,
दीपक–शिखा पै दौरि देह ही जलाते क्यों ?
तैसेई 'दिनेश' दुःख बंधन विलोकते तो,
गुंजि गुंजि भृंग कंज–कोषन बँधाते क्यों ?
विरह-कथा को व्यथा मानते कदाचित तो,
प्रणय-पुजारी प्रेम–नेम ही निभाते क्यों ?

× × × × ×

धाम-धाम धावत चुरावत दही को रहे,
प्रेम-रस ही को रहे नावत सु आठो याम ।
गाते रहे गोकुल गलीन में, बुलाते रहे–
ब्रज की अलीन को थलीन-कुंज लैलै नाम ॥
राते रहे रास के 'दिनेश' पास आते रहे,
नाते सभी नेह के निभाते रहे ठीकोठाम ।
जौलौं रहे आधे, सखी ! तौलौं नेम साधे रहे,
आधे लगीं राधे तो अगाधे चढ़े राधेश्याम ॥

× × × × ×

कैसो है अनूठो अनुराग भाग दोउन को,
सुकवि अनेक जाकी खोजि उपमा रहे ॥
कलित कलिन्दजा के कूल केलि-कुंजन में,
युगल सु-रूप पूरि भूरि-सुषमा रहे ।
जैसो ये 'दिनेश' गोरो भोरो राधिका को रूप,
आठो याम मोहन के मनमें रमा रहे ॥
त्योंहीं सुखधाम अभिराम काम कोटिन सों,
श्याम-श्याम श्याम श्यामा दृगन समा रहे ॥

× × × × ×

जबसों सुन्योहै श्रौन चरित पुनीत वाके,
तबसों 'दिनेश' प्रीति पर-की प्रमानै ना ।
वावरो सो साँवरो सुरूपई विलोक्यो करै,
वाके अनुरूप आन-रूप अनुमानै ना ॥
गायो करै वाही के गुणानुवाद, पायो करै--
रसना सवाद, वाद दूजो करि जानै ना ।
बूड़्यो करै वाही के सनेह-सुख-सागर में,
वरजों घनेरो तऊ मेरो मन मानै ना ॥

× × × × x

दासी अंगभंग खासी कूवरि कुढंग तौहूँ,
अजब निगोड़ी विश्व नखपै नचावती।
लालन लुभावती, रुलाय ब्रजबालन कौं,
ज्वालन जराय सौति मंगल मनावती॥
पावती 'दिनेश' कहूँ सुन्दर सुवेश जौ तौ,
बापुरी न जानै कौन गजब ढहावती।
कहर मचावती तपावती तपाकर कौं,
छहर छपाकर लौं छापहिं लगावती॥

× × × × ×

ऊधवजी पूछो कहा ह्यांकी कुशलाई आप,
जबसों कन्हाई गए कछु ना सुहाई है।
गोपी ग्वाल गाई सबै ब्याकुल भुलाई फिरैं,
ऐसी निठुराई क्यों 'दिनेश' उर लाई है॥
गोकुल नसाई जाय मथुरा बसाई, सौति--
चेरी मनभाई प्रीति मेरी बिसराई है।
इतनो सँदेशो कह्यो जाय मनमोहन सों,
मोहिं कलपाई कहो कैसे कल पाई है॥

× × × × ×

मांगते न भीख कभी सुमनों से सौरभ की,
यद्यपि बने वे द्वार द्वार के भिखारी हैं ।
रखते पराग भर पूरा अनुराग किन्तु,
स्वार्थ–साधना से नहीं, मीत हितकारी हैं ॥
विश्व में 'दिनेश' नाम मधुप प्रसिद्ध तोभी,
काठ–कंदरा में कहीं मधु की न क्यारी हैं ।
मारे–मारे घूमते सहारे प्रीति–रीतिही के,
भ्रमर विचारे प्यारे–प्रेम के पुजारी हैं ॥

× × × × ×

निशि में विलोक चन्द्र आनन विमुग्ध होके,
सेवक समान झुक जाते शिर मोरि मोरि ।
निद्रित दशा में भृंग लोचन तुम्हारे नित्य,
रखते हृदय में बंद मंद मंद लोरि लोरि ॥
दिन में 'दिनेश' विछा देते पट–अंतर को,
पंकज कलीन के नवीन बंद छोरि छोरि ।
होते बड़े प्रेम से सहर्ष हैं गले का हार,
फिर क्यों चलाते हो वृथाही इन्हें तोरि तोरि ॥

× × × × ×

❊ प्रेम-पयोनिधि ❊

(अपार अम्बुधि में सिवाय समीर के प्रेमी का अन्य कोई सहायक या सखा नहीं है। वही दशा पूछता है, छेड़ता है, और उसी के झोंको से बहाव है। अत: उसी से प्रेमी अनुरोध करताहै !)

(सवैया)

सुनता था कहीं जो सनेह-कथा,
तो यही मनमें बस ठानता था ।
विहरूँ चल प्रेम पयोनिधि में,
सुख-मूल इसे अनुमानता था ।।
अनजान में कूद 'दिनेश' पड़ा,
विधि भेद नहीं पहचानता था ।
इतना है अथाह असीमित ये,
मैं ज़रा भी नहीं यह जानता था ।।

× × × × ×

कभी डूबता हूं उठता हूं कभी,
पड़ा भौंर में चक्कर खा रहा हूं ।
किस हेतु ? हूं कौन? कहूं क्या कथा,
क्यों वृथा यह संकट पा रहा हूं ।।
बतलाऊँ 'दिनेश' पता क्या तुम्हें,
किस ठौर से क्योंकर आ रहा हूं ।
बहता हुआ प्रेम पयोनिधि में,
मैं कहां किस ओर को जा रहा हूं ।।

× × × × ×

यदि मित्र है मेरा समीर सखे,
तो मुझे अब छेड़ना छोड़ दे तू ।
उपकार बने तो बना इतना,
भ्रमजाल के बंधन तोड़ दे तू ।।
सुख पाऊं 'दिनेश' जहां, जिससे,
उस जोड़ के साथ में जोड़ दे तू ।
इस जीवन की तरणी को ज़रा सा,
अनंत की ओर को मोड़ दे तू ।।

+ × × × ×

तजि जेह* औ गेह को नेह सबै,
पथ-प्रीति में सांचो सिधाइबो है ।
रचि झूठो प्रपंच को मंच वृथा,
दोऊ हाथ 'दिनेश' दुराइबो है ।।
अनुराग को बाग लगाइबो तो,
सुख पाइबो देह दहाइबो है ।
नहीं छेम वा हेम सों काम तिन्हैं,
जिन्हैं प्रेम को नेम निभाइबो है ।।

× × × × ×

जिसके लिए संकट को सुख मान,
'दिनेश' सदैव सुखी रहा हूं ।
जिसके लिए आँसुवों के विष-बुन्द,
सप्रेम पियूष से पी रहा हूं ।।
जिसके लिये अंग विभूति रमा,
अनुराग से सेलियां सी रहा हूं ।
जिसके लिए जीवन दे रहा हूं ।
उसी ज्योति की ज्योति से जी रहा हूं ।।

---

* जेह=जान (प्राण)

रे मन मूढ़ भवै भरमैं कित,
हैं विरथा वित की अभिलाखैं ।
सम्पति सों नहिं साखैं चलैं,
अस भाखैं 'दिनेश' सबै श्रुति साखैं ॥
चाखैं सुधारस सोई सदेह,
जो नेह सदा हरि को उर राखैं ।
लाखैं भरी धरी ताखैं रहैं,
मुँदि जातीं जबै ये अचानक आखैं ॥

× × × × ×

शठता वश चाल कुचालन सों,
जग जालन में फँसि मूढ़ रह्यो ।
अघभाजन पेटहि पालन में,
प्रति कालन कष्ट अनेक सह्यो ॥
रस रूप व्है व्यापि 'दिनेश' रह्यो,
तेहि ईशहि ध्याइ न पुण्य लह्यो ।
सब आयु गई नहिं पान कियो,
वसुधा में सुधारस जात बह्यो ॥

× × × × ×

मुखचंद विलोकन के हितही,
प्रिय रूप को ध्यान लगाती रहीं ।
भ्रमजाल विहाय सबै जग के,
जप जोग समाधि जगाती रहीं ।।
निशि द्योस 'दिनेश' निमेष तजे,
नलिनी सी ठगी अकुलाती रहीं ।
मनकी अभिलाष पुजी न तऊ,
अँखियाँ दुखियाँ ललचाती रहीं ।।

× × × × ×

कानन दीन्हें रहौं अँगुरी,
ढिग प्रानन के तबहूँ कढ़ि आवत ।
राखति हौं मुख बंद तऊ, उर–
बीच सनेह कथा पढ़ि आवत ।।
मूंदे रहौं दृग द्वार 'दिनेश'
तऊ मन मंदिर में मढ़ि आवत ।
चेटक सी करिकै चितचोर,
अरी कित सौं चित पै चढ़ि आवत ।।

× × × × ×

बैठि इकन्त मयंकमुखी,
मनमें मनमोहन की मढ़ि मूरति ।
वारति प्रान 'दिनेश' कबौं,
कबहूँ करि मान गुमान सों घूरति ।
लेति कबौं रस के चसके,
कबहूँ हँसके उर आनँद ऊरति ।।
पूरति यों मनकी अभिलाष,
विसूरति त्यों वह साँवरि सूरति ।।

× × × × ×

प्रीति पुनीत की रीति न जान,
सदा विपरीत अनीति निवाहत ।
नाउँ सुधाकर है तो कहा,
विष आकर सों जो करै नित आहत ।।
काह 'दिनेश' दवागिनि है,
विरहागिनि सों जेहिको तन दाहत ।
व्यर्थ तरैंयन की चिनगारि,
चकोरिन चंद्र चुनावन चाहत ।।

× × × × ×

दौड़ रही है दिगंचलों में यों,
मिटा मनका परिताप रही है ।
चञ्चल चित्त बनी चपला,
घन मंडल में घुस काँप रही हैं ॥
खोजने को निज इष्ट 'दिनेशजू'
भोग सभी अभिशाप रही है ॥
रंग विरंग के फीते लिये यह,
आशा मेरी नभ नाप रही है ॥

× × × × ×

वेदना है ये विचित्र विछोह की,
मोह की आह कराह नहीं है ।
सम्बल है न स्वयं बल है पर,
हीन कहीं उतसाह नहीं है ॥
चाह है ऐसी 'दिनेश' भरी,
जिसकी कुछ तौल या थाह नहीं है ।
होगी कभी वह पूरी प्रभो,
इसकी भी ज़रा परवाह नहीं है ॥

× × × × ×

हो तुम अंतरयामी प्रभो पर,
अंतर मेरा न जान सके हो ।
भूल रहे हो निरंतर क्यों,
क्या मुझे इस पात्र का पा न सके हो ?
आपकी छांह में मैं हूँ छिपा,
क्या इसी से नहीं पहिचान सके हो ?
कौन सा दोष विशेष है नाथ,
'दिनेश' को जो अपना न सके हो ?

× × × × ×

खुलते हो नहीं तुम प्रेम के पाश से,
तो क्यों हमें फिर खोलते हो ?
मनमंतर देते नहीं अपना,
मम अंतर तो क्यों टटोलते हो ?
तुलते हो 'दिनेश' नहीं तुम तो,
क्यों हमीं को तुला पर तोलते हो ?
कर जोड़ के पूंछता हूँ तुम से,
इस बात पै क्यों नहीं बोलते हो ?

× × × × ×

* बुझे हुये दीपक की आत्म कथा *

(पूर्व स्थिति)

विश्व प्रपंच के पंच महान में,
तत्व का मान लहा करता था ।
राग विराग से दूर 'दिनेश,
सभी भवभार बहा करता था ।।
वारि के वन्हि के व्योम के वात के,
घात समस्त सहा करता था ।
युक्त था यद्यपि भूतल से पै,
विमुक्त सा मुक्त रहा करता था ।।

(उद्भव)

मेदिनी मातु की गोद से खोद,
समोद मुझे अभिषिक्त कराया ।
प्रेम से पिण्ड बना घटकार ने,
चक्र चढ़ाकर नाच नचाया ।।
रूप दे रंग दे ढंग सुढंग दे,
अंग सभी परिपक्व बनाया ।
यों जड़ चेतन में भ्रमि अंत में,
दिव्य 'दिनेशजू' दीप कहाया ।।

(लोक व्यवहार)

संसृति ने अपनाया मुझे,
अति आदर से गृह अंग बनाया ।
सींचि सनेह से नेह के साथ,
सदा वर आसन पै बिठलाया ।।
प्रत्युपकार में मैंने 'दिनेश'
हटा तमतोम प्रकाश दिखाया ।
जीवन ज्योति जगा जग में,
सुख के सब मंगल साज सजाया ।।

(आदर प्राप्ति)

सरेशामही से शुचि सुन्दरियां,
सब मेरा सिँगार सँवारती थीं ।
महलों में मज़ार में मन्दिर में,
मुझे आरती मान उतारती थीं ।।
प्रतिकूल प्रभंजन के अभिशाप को,
अंचल ओट निवारती थीं ।
सुख राशियां दासियां सी थीं बनी,
बड़े चाव से पाँव पखारती थीं ।।

(अवसान)

जलता रहा जीवन में जबलों,
अपना जलवा दिखलाता रहा ।
परवाना बना जग था पर मैं,
अपने मद में मदमाता रहा ॥
कहलाता 'दिनेश' प्रदीप रहा,
रजनीपति का लघुभ्राता रहा ।
बुझतेही समां सब जाता रहा,
दुनियां में किसी से न नाता रहा ॥

☞ उपर्युक्त छन्दों के शब्दों का अभीष्टार्थ

विश्व प्रपंच=सृष्टि रचना
पंच महान=पंच महाभूत
तत्व का मान=पृथ्वी तत्व का मान
राग विराग=सूख दुख
गोद से खोद=पृथ्वी से खनकर
घटकार=कुंभकार (विधाता)
नाच नचाया=चौरासी भरमाया
सनेह=तैल, पोषक द्रव्य
प्रतिकूल प्रभंजन=बुझा देने वाली वायु, आधिव्याधि

* ब्रज-बालाओं का राग विराग *

प्रात गई हुती हौं यमुना तहँ,
औचकही घनश्याम पधारे ।
बांसुरिया वनमाल धरे,
शिर मोरपखा पटपीत सँवारे ॥
देखि 'दिनेश' दुरी सकुची पर,
आनि मिले हठ सों हरि प्यारे ॥
यों सखि आजु निकुंजन में,
हम श्यामा भईं भए श्याम हमारे ॥

× × × × ×

राधे गोविन्द मिले अलि औचक,
कुंजन वीच विहार थली पै ।
दै गलबाँहि धऱ्यो कर लै,
उर वीच उरोज सरोज लली पै ॥
देखि 'दिनेश' छके दृग त्यों,
उपमा गुनि यों सुषमा अवली पै ।
मानो महेश की मूरति मान,
फनिन्द अऱ्यो अरविन्द कली पै ॥

× × × × x

दामिनि ज्यों घन मध्य लसै,
हरि अंक में त्यों वृषभानु लली है ।
श्याम सरोवर के जल में जनु,
राधे खिली नवकंज कली है ।।
ऐसी 'दिनेश' जुरी जुग जोरि,
चवाउ करै तऊ गाँव गली है ।
या व्रज की वलिहार कहै जो,
भली को बुरी औ बुरी को भली है ।।

× × × × ×

देवकी मातु यशोमति के प्रति,
देखि चुकी सिगरी छल छाँहीं ।
व्यर्थ भई वदनाम सखी,
व्रज की वनिता उनके सँग माँही ।।
बात अनोखी 'दिनेश' कहा,
जो व्रजेश रहे रमि कूवरि पाहीं ।
श्याम सनेह की श्याम कथा,
जिय जानत है तऊ मानत नाहीं ।।

× × × × ×

जानि सकी न विकी ठगि औचक,
भूल है आपनि नाहिं पराइये ।
होनी हुती सो भई वदिकै,
जेहि भांति बने विगरी सुधराइये ॥
दोष न यामें 'दिनेश' कछू,
परको घरको जेहि को बतराइये ।
कोह न कै मनमोहन पै सखि,
मों मनको कछु धीर धराइये ॥

× × × × ×

धार कृपान पै है चढ़िबो,
कढ़िबो व्रजवीथिन कुंजन माहीं ।
ग्वालन संग गोपाल तहां नित,
छीनि दही मही माखन खाहीं ॥
साँची 'दिनेश' न झूठ कछू,
इन बातन सों गुरु लोग सकाहीं ।
लाज गँवाइबो जाइबो है,
जिय जानत है तऊ मानत नाहीं ॥

× × × × ×

निरमोही भए गए गोकुल सों,
जिय ठान तऊ मनुहारे ठनैं ।
मिलिहैं हरि बेगि वहोरि सखी,
अस जोगु सुज्योतिष वारे गनैं ।।
दुविधा में 'दिनेश' दवागिनि सी,
विरहागिनि प्रान हमारे हनैं ।
छवि श्याम की मंजु सनेहमयी,
न विचारे बनै न विसारे बनैं ।।

× × × × ×

इक ओर तो मोहन पै ल्है लटू,
मन मेरो भटू लुटि जाइबो है ।
सुनि दूजे चवाइन की चरचा,
गुरु लोगन सों डरपाइबो है ।।
कछु सूझै उपाव 'दिनेश' नहीं,
दुविधा में कलेश उठाइबो है ।
इत लाज निगोड़ी बचाइबो है,
उत नेह को नात निभाइबो है ।।

× × × × ×

मौज मिलै जौ तुम्हें मनभावन,
नेहलता झरसावन में।
तौ इतहू मन मोद लहै,
चित रावरे के हरषावन में॥
तोष तुम्हें है 'दिनेश' जुपै,
इन नैनन के तरसावन में।
तौ सुख है हमहूं को घनो,
दुख के अँसुवा बरसावन में॥

× × × × ×

अनुराग की बाग लगा उर में,
विरहागि की आगि जगाते रहो।
मन मूंठि में दावि दया तजि त्यों,
मनमारन मूंठि चलाते रहो॥
अपनाते 'दिनेश' रहो उनको,
उनही के सनेह समाते रहो॥
कलपाते रहो हमको दुख सों,
तुम तो सुख सों कल पाते रहो॥

× × × × ×

आयो वसंत खिले तरु किंशुक,
कुंजन भो मनो आगबबूल्यो ।
मोहन गोपिन को संग लै तहँ,
खेलि रहे लुकि आँखमिचूल्यो ।।
राधे दुरीं तेहि बीच 'दिनेश'
मुखाकृति हेरि हियो-हरि भूल्यो ।
ता छिन वा छवि छाजति यों,
मनो पावकपुंज में पंकज फूल्यो ।।

राष्ट्रीय

* जीवन-संग्राम *

(छप्पय छन्द)

जन्म मरण में, नाच गान क्रीड़ा क्रन्दन में ।
खानपान सम्मान प्रेम प्रति-छलछंदन में ।।
जपतप तीरथ दान पुण्य संध्यावन्दन में ।
सुखदुख शिक्षा शांति-क्रांति भव के फन्दन में ।।

होता रहता सब कहीं, जन जीवन संघर्ष है ।
इससे जो बचकर रहे, किसमें इतना धर्ष है ।।

× × × × ×

अनी अजेया-ऐक्य, ज्ञान सेनापति बांका ।
दृढ़ सद्‌गुण का धनुष, सुकृति का तीर शलाका ।।
स्वतंत्रता की शक्ति, सत्यता का शुचि शाका ।
समानता का शंख, सुयश की धवल पताका ।।

जिसके वश इतना प्रबल, साधन स्वतः प्रणीत है ।
उसकी जीवन-युद्ध में सदा जीत ही जीत है ।।

× × × × ×

है यदि जय की चाह, खड्ग साहस की खोलो ।
ढाल धैर्य की गहो, सत्य के कड़खे बोलो ॥
अतुल आत्मबल भरो, कौन कितना है तोलो ।
अगर बने तो हाथ, कर्म-गंगा में धोलो ॥

पड़ा पड़ा जो सड़ गया, मुर्दा बनकर खाट का ।
वह कलंक ही लेगया, घर का हुआ न घाट का ॥

+ × × × ×

जीवन में क्या शांति, और क्या क्रांति कड़ी है?
सुखदुख का अनुमान, व्यर्थ की भ्रांति बड़ी है ॥
झेला साहस साथ उसे, जो आन पड़ी है ।
खेला खुलकर हाथ, विछादी लड़ी-लड़ी है ॥

जीत गया जो लड़ गया, भगा वही बदनाम है ।
मारगया या मर गया, यह जीवन संग्राम है ॥

× × × × ×

(कवित्त)

रंग में रँगूं तो रँगूं जन्मदा वसुंधरा के,
चंग में चढ़ूं तो विश्व प्रेम की चढ़ाई में ।
फंद में फँसूं तो फँसूं सुन्दरी स्वतंत्रता के,
छन्द जो रचूं तो रचूं उसकी बड़ाई में ॥
कामना 'दिनेश' के यही है अखिलेश एक,
क्लेश जो सहूं तो सहूं देश की भलाई में ।
जीवित रहूं तो रहूं अर्पित उसी के हेतु,
अगर मरूं तो मरूं स्वत्व की लड़ाई में ॥

× × × × ×

सत्यता सुशीलता सुसभ्यता सहानुभूति–
संयुत सप्रेम प्रेम–पंक में सने रहैं ।
प्यारे भाइयों का स्वत्व स्वार्थ सनमान सभी,
ठीक–ठीक अपने समान ही गने रहैं ॥
कुशल 'दिनेश' हों विशेष कला कौशल में,
उन्नत विचार तार–एकता तने रहैं ।
हिन्दी हिन्ददेश की समुन्नति के शुद्ध भाव,
हे हरि हमेशा हिन्दू जाति में बने रहैं ॥

× × × × ×

पतिव्रत धर्म कर्महीन नारि जानै कहा,
काह है सती को तेज कैसी शिवा सीता है ?
तैसेई 'दिनेश' नर-अधम असाधुन को,
व्यर्थ वेद दरशन पुरान ज्ञान गीता है ।।
पाठ स्वावलम्ब का पढ़ाए फल होत कहा,
जाकी आतमा ने नहीं इन्द्रियों को जीता है ।
स्वादु क्या स्वतंत्रता का जाने वह जाति? जाको–
जन्म ही वसुंधरा पै दासता में बीता है ।।

× × × × ×

किंचित नहीं है उसे चाह मृदुभोजन की,
रंचक न लोभ भरे भूरि–तहखानों का ।
लालसा नहीं है मंजु मंदिर निवास की भी,
चाहिए उसे न संग साथही ज़नानों का ।।
प्रस्तुत 'दिनेश' है समोद बिकने को आज,
सौदा करना है किन्तु काम मरदानों का ।
लेना है तुम्हें तो दाम देकर खरीदो क्यों न?
क़ीमत स्वतंत्रता की शोणित जवानों का ।।

× × × × ×

वैभव बढ़ाने की न चाह वित्त पाने की न–
मौज ही उड़ाने की न भ्रांति मरजाने की ।
कामना कहाने की न झूठ बतराने की न–
माल लूटखाने कण्ठ कामिनी लगाने की ।।
नीचता नशाने की 'दिनेश' नेति राखै सदा,
आने की न मानै गैर बात बहकाने की ।
दीनन बचाने की अछूतन उठाने की ही–
टेक एक राखै यहै आन मरदाने की ।।

× × × × ×

चाहेंगे न स्वार्थ परमार्थ के बहाने जौन,
अपनी पराई भेद-भावना मिटाएंगे ।
भाई की भलाई औ स्वदेश सेवकाइ ही को,
मान के प्रधान धर्म अपना बनाएंगे ।।
मान अपमान सुख संकट समान जान,
प्रेम से 'दिनेश' जौन द्वेष बिसराएंगे ।
देगा दुखियों का घोष जिनके हृदै को ठोस,
वेही आशुतोष जोश जाति में जगाएंगे ।।

× × × × ×

साहस की ढाल औ सुधार की दुधार लेके,
ढोंगिया ढकोसलों के ढीह को ढहाएंगे ।
खाएंगे न मार, यार होकर तयार शीघ्र,
सारे झंझटों को धार-गंग में बहाएंगे ।।
छाएंगे 'दिनेश' सुख सम्पति अशेष दिव्य,
सुयश पताका चारों ओर फहराएंगे ।
हौसला बढ़ाएंगे मिटाएंगे दिलों के दोष,
लाएंगे न रोष जोश जाति में जगाएंगे ।।

× × × × ×

जैसे ढूंढ़ ढुंढा को जलाया प्रहलाद ने था,
आज तक गाता विश्व जिसके तराने हैं ।
जैसे वीर पार्थ ने किया है दाह खाँडव का,
जैसे क्रूर कंस-की कुमौत के बहाने हैं ।।
जैसे बजरंग ने जलादी लंक रावण की,
शान दिखलादी जिसे जानते ज़माने हैं ।
त्योंही जला देते हैं पिशाची पराधीनता को,
होते जो 'दिनेशजू' स्वदेश पै दिवाने हैं ।।

× × × × ×

करके दिखाओगे न कोई करतूत कभी,
कोरी झूंठ मूठही की डींग सदा मारोगे ।
मेल का मचाओगे झमेल रेलपेल किन्तु,
स्वार्थ के शिकारी बने मैल न निकारोगे ॥
सम्भव 'दिनेश' नहीं छलसों हो इष्ट सिद्धि,
दिल से जो सत्य नीति प्रेम न प्रचारोगे ।
धारोगे न शील शांति समता स्वयंही यदि,
तो फिर समाज देश जाति क्या सुधारोगे ॥

× × × × ×

काम तो हराम है छदाम भी करैंगे नहीं,
नाम की तमन्ना किन्तु दिलमें समानी है ।
कौल बेक़रार बेशुमार वातचीत सभी,
विषम विचार औ प्रचार मनमानी है ॥
क्या कहूं 'दिनेश' देशनेता बने चारों ओर,
केवल सुनाते फिरैं करुण-कहानी है ।
क्योंकर रहेगी उस जाति की निशानी भला,
जिसका जहां में जमाख़र्च ही जबानी है ॥

× × × × ×

हाथ न हिलायेंगे डुलायेंगे न कोई काम,
औंधे पड़े खाट पै भलेही सड़ जायेंगे ।
बारबधू वारुणी के वश व्है विधर्मी बने,
सोचते न नेक अंत कौन गति पायेंगे ।।
देखलो 'दिनेश' ये लकीर के फ़कीर वीर,
ह्यां के-से अमीर नहीं अन्त दिखालायेंगे ।
ऐसे कूरकर्मी कहो कबलों दिवाने बने,
बाप के जमाने के खजाने खोद खायेंगे ।।

× × × × ×

रोज़ पिटते हो लुटते हो घरही में हाय,
तोभी जूं ज़रा भी कभी रेंगती न कान में ।
मान में गुमान में न कम हो किसी से कहीं,
सबसे सवाये सदा पाए गए शान में ।।
क्या कहूं 'दिनेश' मैं विशेष वीरता की बात,
तुमसे महान आन कौन है जहान में ।
फिर क्यों सुजान भय मान डरते हो अरे !
सिंह बनजाता, श्वान अपने मकान में ।।

× × × × ×

बहुमत होता मान्य, मानते बखूबी फिर–
खूबी कौनसी जो खुद ही को ठगा देते हो ।
कौन अक़लमन्दी है बनाना दलबंदी भला,
गंदी एक चिन्दी जो हमेशा लगा देते हो ।।
एक हो जुटोगे तभी जीतोगे 'दिनेश' जंग,
तो क्यों एकता को धता देके भगा देते हो ।
सोचते नहीं हो हानि लाभ को ज़रा भी यार,
कैसे दोस्त हो जो दाँव ही पै दग़ा देते हो ।।

× × × × ×

ज़र की तमन्ना पर ज़रर* कमाया खूब,
मुल्क को मिटाया चाल खेले सभी जाल की ।
देशी रोज़गार को बिगार, हो गुलाम ग़ैर,
कोरी ठाठवाट की विलायत के माल की ।।
क्या कहूं 'दिनेश' किए लाखों बदकार तो भी,
हल न दलील हुई रोटी के सवाल की ।
कहिए नफ़ा क्या मिला आपको जनाब,
हुए नाहक़ ख़राब मुफ्त मुरग़ी हलाल की ।।

* हानि, नुक़सान ।

पंक में फँसे हैं पूंजीवाद की . पिशाचता के,
पाते हैं न पंथ घिरी घोर अँधियारी है ।
पतन हुआ यों हुए पतित पशू के तुल्य,
हो रहा भिखारी पेट प्राण का शिकारी है ।।
करते हमेश हैं अटूट श्रम तो भी नित्य,
खाते गालियां हैं और होती चाँदमारी है ।
क्या कहूं विशेष क्लेश आपसे दया के धाम,
देखलो 'दिनेश' कैसी दुर्दशा हमारी है ।।

× × × × ×

प्रकृति जुदा है, भरा भेद से खुदा है और,
भाषा भेष भाव रंग ढंग कुल न्यारा है ।
मिलता मिलान है न कोई किसी बात में भी,
धर्म कर्म आदि में सभी में बँटवारा है ।।
दादा ने ख़रीदा है न देकर 'दिनेश' दाम,
जन्मे हो न ह्यांपै औ न गाड़ा यहां नारा है ।
बाप का तुम्हारे फिर कौनसा इज़ारा भला,
भारत के हम और भारत हमारा है ।।

× × × × ×

आसन प्रतीची में हिला है कूट शासन का,
हो रहा बमों के बूत–बल पै विलास है ।
ह्रास पूंजीवाद की कला का है उदीची बीच,
साम्यवादी शृंखला पसारे चिदाकाश है ।।
दक्षिण दिशा मैं त्यों 'दिनेश दृढ़ता के साथ,
दैन्यता मिटाने का निरंतर प्रयास है ।
प्राची प्रभाशाली में अहिंसा की फनाली लिए,
शांति-सुख-शाली क्रांति-लाली का विकास है ।।

× × × × ×

विश्व से विनाश है कुचाली कूटशासन का,
स्वत्व के सिंहासन पै न्याय का निवास है ।
पीड़न-प्रणाली का अवास उजड़ा है पड़ा,
हांक-हड़ताली का अनोखा अट्टहास है ।।
पूंजीवाद रूपी रातकाली की कला का ह्रास,
साम्यवाद रूपी अंशुमाली का प्रकाश है ।
ध्वंस है धरा से व्याधि-व्याली भ्रांतिवाली और,
शांति-सुख-शाली क्रांति-लाली का विकाश है ।।

× × x × ×

❋ जन्मभूमि के प्रति ❋

(दोहा)

जन्मभूमि जननी जनक, हैं जीवन-सुख हेत ।
इनके हित जे नहिं जियें, वृथा जन्म जग लेत ।।
× × × × ×
धन्य धन्य वे जे लहैं, अंत ईश–पद–प्रेम ।
जन्हुसुता–जल तुलसिदल, जन्मभूमि-रज हेम ।।
× × × × ×
बल विद्या वैभव विपुल, अतुल राज्य धनधाम ।
जन्मभूमि हित जो नहीं, तो आए केहि काम ।।
× × × × ×
पले पाय जेहि भूमि कर, अन्न अम्बु अरु वायु ।
देखि तासु दुख नहिं द्रयो, कियो अकारथ आयु ।।
× × × × ×
अभिलाषा हिय में यहै, यदपि अहौं अति रंक ।
लहौं सेइ पद अंत में, जन्मभूमि तव–अंक ।।
× × × × ×
जन्म दियो पाल्यो कियो, सबविधि हित उपकार ।
जननी ! तेरे भार सों, कभी नहीं उद्धार ।।
× × × × ×

अनुरोध (सवैया)

धर्म पै चोट करो न सहो, पर,
प्रेम स्वदेशऽरु जाति सने रहो ।
वस्तु विदेशी न हाथ गहो,
निज देश ही के तन तार तने रहो ॥
शासकवर्ग निरंकुश के हिय,
अंकुश ऐक्य 'दिनेश' हने रहो ।
भ्रांति भगाय डटो समरस्थल,
क्रांति करो पर शांत बने रहो ॥

× × × × ×

कै बकवाद बृथा दल बाँधि,
दलीलन सों नहिं द्वंद मचाओ ।
चाहो न नाम करो बस काम,
निकाम कहाय कलंक न लाओ ॥
मेटो 'दिनेश' स्वदेश कलेश,
कुवेश विभीषण का न बनाओ ।
आपस में करि प्रेम सखे, मनु–
जाति में जीवन ज्योति जगाओ ॥

× × × × x

गाइये गीत सदा हरि के उर,
प्रेम दया ममता उपजाइये ।
जाइये भूलि कुपंथ कबौं नहिं,
कामऽरु क्रोध न चित्तहिं लाइये ।।
लाइये दम्भ न द्वेष 'दिनेश',
बृथा मन में नहिं मोहहु छाइये ।
छाइये शांति सुशिक्षा कला,
मनु-जाति में जीवन ज्योति जगाइये ।।

सामयिक एवं सामाजिक

"शठं प्रति शाठ्यं कुर्यात्"

आँखे करै टेढ़ी तो मरोरि चौंह मेढ़ी की-सी,
भौंह पर झूमके झड़ाका हाथ झाड़दे ।
देवे गर गाली तो पनाली सी ज़बान खींच,
भोंकदे भुजाली और लाली तक फाड़दे ।।
ईंट जो उठाए तो 'दिनेश' प्रतिउत्तर में,
शीश पर पत्थर के पर्लाट पहाड़दे ।
हेकड़ी दिखाए तो हरामी को पछाड़ चट–
छाती पै सवार हो तड़ाका तोड़ हाड़दे ।।

नमक हराम

शादी में शरीक हो मुसीबत में बाज़ रहे,
फ़र्ज खुद-ख्वाहिशों का ख्याल ही मुदामी है ।
खाए आबदाना जिस मादरेज़मीं का, बने–
उसीका बिगाना और बायसे-ग़ुलामी हैं ।।
मानता 'दिनेश' नहीं जोकि अहसान बल्कि,
करता जहां में अयां झूठ बदनामी है ।
हामी है न क़ौम का न क़ौल का क़यामी, रखे–
नीयत में ख़ामी वही नमक हरामी है ।।

× × × × ×

बालक कैसा हो ?

प्रेमी प्रेमियों का और नेमी नेमियों का सदा,
क्षेमी क्षेमियों का अभिलाषी दरशन का ।
दाहक त्यों दुष्ट का, सराहक सुजन का हो,
गाहक गुणज्ञ का, ग़ुलाम गुरुजन का ।।
घालक घमंडी का, सँचालक सुनीति का हो,
बालक विधाता का, प्रपालक वचन का ।
सेवक स्वजाति का हो, सैनिक स्वदेश का हो,
दैनिक 'दिनेश' हो दमाद दुशमन का ।।
× × × × ×
स्वामी दयानंद सा समाज के सुधारने में,
श्रद्धानंद ऐसा हो स्वजाति की भलाई में ।
गोविंदगुरू सा सिंह धर्म परिरक्षण में,
प्रमुख प्रताप सा स्वदेश-सेवकाई में ।।
ऐसा बरदान दो 'दिनेश' को महेश होवे–
तिलक समान राजनीति पटुताई में ।
पेशवा शिवा-सा हो समर्थ स्वत्व-संगर में,
लाजपति जैसा लाज-पति की लड़ाई में ।।
× × × × ×

दिनेश प्रकाश

चोरै जैसे चन्द्रिका चकोरै होति रजनी ज्यों,
मोरै ज्यों डरावै मेघ-गर्जनि अकाश है ।
पुरुष नपुंसक को कामिनी कलोलैं जिमि,
विरहीन दाहक ज्यों पुष्पित-पलाश है ॥
मूरख को ग्रंथ आरसी ज्यों अंधलोचन को,
पोचन को जैसे साधु–संगति का बास है ।
सूम को विनाश जैसे दीसै द्रव्य-दान माँहि,
तैसई उलूक को 'दिनेश' का प्रकाश है ॥

कूटनीतिक चाल

जीतना जिन्हें है ऐ 'दिनेश' जंग जालिमों से,
वाजिब तिन्हें है नीति ऐसी भी निभाते जाँय ।
ताल भी बजाते जाँय, जाल भी बिछाते जाँय,
चाल भी छिपाते जाँय, माल भी दबाते जाँय ॥
घात भी लगाते जाँय, मात भी खिलाते जाँय,
बात भी बनाते जाँय, लात भी जमाते जाँय ।
क्लांति भी मिटाते जाँय, भ्रांति भी भगाते जाँय,
शांति भी सुनाते जाँय, क्रांति भी मचाते जाँय ॥

× × × × ×

आन-बान ठाट-बाट हाट में बिकात नाहिं,
गरुता गँवाय कहो कौन भयो कीर्तिवान ?
बल में महान सर्वसम्मति निधान अरु,
सुन्दर सुजान तऊ होत नहीं भासमान ।।
देखहु 'दिनेश' यह जाहिर जहान बीच,
गौरव विहीन नर श्वान के समान जान ।
ताहुपै न होय ज्ञान कैसे हो बने अयान,
धोए देत हाय शान खोए देत स्वाभिमान ।।

× × × × ×

बान औ कमान में बखान कर्ण अर्जुन की,
चंडिका कृपान गान ग्रंथन बिचै छई ।
आन अभिमन्यु की प्रताप की कलाप-कीर्ति,
शान त्यों शिवा की मनो साथ ही सिधै गई ।।
व्हैगई 'दिनेश' शेष शक्ति भावभक्ति सबै,
दीनता समेत हाय हीनता उदै भई ।
ख्वैगई कि स्वैगई कि ध्वैगई न जानी जाय,
भारतीय वीरता विहाय धौं कितै गई ! !

× × × × ×

ऐंठे फिरैं आर्य औ विषाक्त शाक्त पूरे बने,
शैव दैव दूजे स्वयं, और को गनैं नहीं ।
ब्रास्म जैन सिक्ख ब्रह्म वैष्णव समाज त्योंही,
एक दूसरे की छांह छ्वावत तनै नहीं ।।
दीखती 'दिनेश' सूखी शान ही सनातनी ये,
चारों ओर जासों ठान-एकता ठनै नहीं ।
ऐसे छिन्नभिन्न हिन्दू धर्म को विधर्मियों पै,
बन्दर–बँटावहू सों बाँटत बनै नहीं ।।

× × × × ×

ब्राह्मण बड़प्पन गँवाते अपने ही हाथ,
क्षत्रियों में इसी भाँति कुमति समाई है ।
वैश्य बुद्धिहीनता सों वैभव विनाश करैं,
शूद्र जातियों की कौन चरचा चलाई है ।।
यद्यपि 'दिनेश' चारों एकही पिता के पुत्र,
तदपि प्रचंड ऊँच नीच की लड़ाई है ।
सारी आपदाओं का प्रधान यही कारण है,
मानते न भाई को कभी ये जातिभाई है ।।

× × × × ×

कपूत

कुल में कलंक होत, पुरिखा सशंक होत,
बंक विधि होत, अंक सांचे गुनि लीजिये ।
फीका सब रंग होत, सारा साज भंग होत,
जंग होत नित ही, हजार ढंग कीजिये ।।
भाषत 'दिनेश' शेष धर्म कर्म शर्म होत,
सम्पति समेत, शोचि शोक घूंट पीजिये ।
जात-की घरी ही जो न त्यागीं गोद मात की तो,
येते उतपात होत पूत पातकी जिये ।।
× × × × ×
जौलौं रहे बारे जानि प्रानन सों प्यारें मानि–
आंखिन के तारे भए दम्पति सुखारे हैं ।
तेई होनहारे जबै ज्वान जर वारे भए,
जोरू के इशारे नचे त्यागि घर बारे हैं ।।
भाषत बनैहै ना 'दिनेश' गति पूतन की,
नमकहराम महामंद मतिमारे हैं ।
सारी शक्ति हारे पंचबान के सँहारे पके–
पात से बिचारे बने छैल मतवारे हैं ।।
× × × × ×

जनम कुलीन घर पाई विसराई चाल,
भद्रता भुलाई परि गुंडन के संग में ।
चुटिया कटाई बाल बेतुके रखाई हिन्दू–
धरम गँवाई लाज बोरी धार गंग में ।।
भाषत 'दिनेश' चलैं झूमत गलीन बीच,
गावत रसीली तान यौवन उमंग में ।
पुतले नज़ाकत के नाचत नवेली जनु,
रँगिकै रँगीली बार–बनिता के रंग में ।।

× × × × ×

गाँव औ गली ते रहे, शाह औ छली ते रहे,
चाल-धांधली ते रहे ढलिकै कुढंग में ।
कूर करनी ते रहे, दूर घरनी ते रहे,
बार–तरुनी ते रहे रीझे रागरंग में ।।
जबलौं सुभीते रहे प्याले पड़े पीते रहे,
पीछे गएबीते रहे रीते हाथ तंग में ।
बाबू बने जी–ते रहे काहू भांति जीते रहे,
अंत में फजीते रहे जीते रहे जंग में ।।

× × × × ×

अ-बलों की आह

प्रलै के पयोनिधि तैं परम प्रचंड अरु,
विकट उदंड बड़वागि की लहर तैं ।
अति विकराल महाकाल के प्रकोपहू तैं,
कठिन कराल कालकूट के ज़हर तैं ।।
तीखन त्रिलोचन के तीखे नैन ज्वालहू तैं,
द्वादश 'दिनेश' हू के भीषण कहर तैं ।
आह अबलान की कराह दुखियान की है,
प्रबल महान दावानल की झहर तैं ।।

समय का फेर

कहत बनै ना भयो काल विकराल ऐसो,
मंजुल-मराल भे चुनैया अरहर* के ।
बारुणी पियैया विप्र बँगला बसैया भए,
वेद के पढ़ैया भे रहैया खँडहर के ।।
आमिष-भखैया ध्रुव-धरम रखैया भए,
पाप के करैया भे कहैया हरि-हर के ।
पुर† के धरैया भए पंडित प्रवीन अरु,
कुल के कन्हैया त्यों गहैया भए हर‡ के ।।

*अन्न विशेष । †कुएँ से सिंचाई का पानी खींचने वाला । ‡ हल

(सवैया)

सब शक्ति है शंकर के करमें,
इस संसृति को जो सँहारै सृजै ।
निज-कर्म का पाते सभी फल हैं,
मुनि मानव दानव देव–ऋषै ॥
जग–जीवन–युद्ध के जीतने का,
इक पौरुष ही है प्रधान विषै ।
जिसमें जितनी क्षमता है 'दिनेश'
उसे मिलती उतनी है विजै ॥

× × × × ×

ऊँचे गए चढ़ि जो गिरि पै,
इकरोज़ ज़मीं पर सोइ गिरैंगे ।
नीचे परे जे अधोगति में,
कबहूं यमराज से ते अभिरैंगे ॥
आश 'दिनेश' रखो हरि पै,
निहचै सुखमं–घन घेरि घिरैंगे ।
वीरवरो करतव्य करो,
पुरुषारथ सों दिन फेरि फिरैंगे ॥

× × × × ×

काशी गया गिरनार गए,
सब पावन तीरथ धाम मँझाये।
पंच महानद पुष्कर मान–
सरोवर सिन्धु में गोते लगाये॥
वासोपवास ब्रतादि 'दिनेश'
सप्रेम किए औ सनेम निभाये।
कीन्हें उपाय सबै सुख के पर,
भागि बिना फिरैं भांग सी खाये॥

× × × × ×

दुष्ट तुलै अपकारन पै तो,
सिखापन दै समुझावै सुकाजै।
नीति अनीति बताय भले,
जेहिसों होइ ग्लानि मनै अति लाजै॥
जो न तजै शठता हठता तो,
'दिनेश' विरोध करै नहिं भाजै।
अंत में एक उपाय यही,
कर पल्लव में करवाल विराजै॥

× × × × ×

सीखैं नहीं गुन बालपने,
बस घूमैं बने चटके-मटके हैं ।
विद्या सुशिक्षा लगै विष सी,
मनभावत चूरन के लटके हैं ॥
शैशव-काल न चेत्यो 'दिनेश' तो,
ज्वान भए शिर-ही पटके हैं ।
भार जँचै घरबार सबै,
अँधरे से फिरैं भटके भटके हैं ॥

× × × × x

चित चाट चढ़ी अँगरेजी पढ़ी,
कुल-कानि कढ़ी गुरु लोगन की ।
नहिं काबू में बाबू रहे अपने,
सपने में लगी लव लन्दन की ॥
नव-फैशन नित्य विचित्र रचैं,
बरबादी करैं तन की धन की ।
धिक, मूंछ औ पूंछ विहाय भले,
बनिजात हैं मानुस ते मनकी* ॥

---

* मनकी=बन्दर ।

बारुणी औ विषहू ते विशेष,
विषाक्त विलोकि जिन्हें बहुतेरे ।
दानव मानव कौन कहै,
डरि भूत परेतहु जात न नेरे ।।
शेष 'दिनेश' सुरेशहु से,
नहिं पार लहैं जिनके परि फेरे ।
घेरे रहैं तिन राँड़न को,
छुतिहा शठ कूकर से बनि चेरे ।।

× × × × ×

आपनो जानि जुपै अपनाइहौ,
तौ बनि सेवक शीश झुकैहौं ।
भूलि सबै अपकार अतीत के,
नूतन प्रीति प्रतीति निबैहौं ।।
पै, रिपु मानि 'दिनेश' वृथा,
त्रसिहौ पुनि तौ नहिं नेकु विसैहौं ।
मारिहौं औ मरिहौं प्रभु केवल,
कालहु से कसिकै लड़ि जैहौं ।।

हास्य-व्यंग

बी० ए० हैं पढ़ाई में बड़ाई है विजातियों में,
हाई है दिमाग़ एक नम्बर ढलाई में ।
दीन से दुहाई है समाई है 'दिनेश' पास
पूरी पंडिताई है स्व-पेट की पलाई में ।।
मूंछ की सफ़ाई है सवाई पूंछ शीश पै है,
टाई है गले में रिष्टवाच है कलाई में ।
येते वे-प्रमाण हैं प्रमाणपत्र प्रस्तुत तो,
देंगे क्यों न प्राण ये स्वदेश की भलाई में ?

× × × × ×

ख़ासी ठाटबाट से दिखाते हाटबाट बीच,
घर में 'दिनेश' चहे चाव के चने रहैं ।
लाकर लगाएंगे बज़ार से उधार नित्य,
तोला भर तेल ताकि बाल चिकने रहैं ।।
भूलके करैंगे नहीं कोई भी सु-काम कभी,
कोरी शौक़ जौक़ ही में इतने तने रहैं ।
घरके न घाट के न दीन दुनियां के रहैं,
बाबूजी बिचारे बेवक़ूफ ही बने रहैं ।।

× × × × ×

हैट हैं चढ़ाते बाल पूंछ से वढ़ाते, मूंछ-
जड़ से कटाते, स्वांग लाते हीजड़न के ।
राम को भुलाते ध्यान रम* से लगाते, मजे-
चाल में दिखाते बड़े नाज नख़रन के ।।
शान त्यों 'दिनेशजू' दिखाते शरमाते नहीं,
होटल में जाते रोज़ खूब बनठन के ।
बातों में बताते बड़े शूरमां लड़ाके किन्तु,
सुनके डराते हैं खड़ाके खडगन के ।।

× × × × ×

खूसट से कोई कोई पेंढुकी वटेर ऐसे,
कोई हैं महोख अवावील चील कौवा से ।
कोई श्वान शूकर शृगाल खर मेंढक से,
कोई खरे खोसड़ा ख़वीस लखनौवा से ।।
कोई खड़े कोई पड़े बैठे हैं 'दिनेश' कोई,
कोई मुंह बाये वने आठोगाँठ नौवा से ।
कालेज से न्यारे हुए फ़ालेज के मारे मनो,
ग्रेजूएट घूमते विचारे कनकौवा से ।।

---

* रम=शराब ।

जकड़े पड़े हैं जीर्णज्वर में हजारों और,
अकड़ें अनेकों की अजीर्ण ने उतारा है ।
लाखों को दिया है दंश दौड़ उपदंश ने त्यों,
देह को करोड़ों की प्रमेह ने विगारा है ॥
रोग सैकड़ों हैं कौन-कौन से गिनाऊँ यहाँ,
देखलो 'दिनेश' क्यों न सामने नज़ारा है ।
बीसवीं सदी की सभ्यता में पलेपोषे पढ़े,
हिन्द वासियों ने खूब जिन्दगी सुधारा है ॥

× × × × ×

सेतपट धारे भाल तिलक सँवारे मूंदि–
कूटी के किवारे रहीं फेरत हजारे हैं ।
जादूगरी जंत्र मंत्र वाजीगरी टोना तंत्र,
मोहन वशीकर 'दिनेश' सिद्ध सारे हैं ॥
बीछी सांप छपकी छछूंदरी छबुन्दा और,
पूतना पिशाच भूत प्रेत तक झारे हैं ।
वारे ते लगाय बूढ़ेपन लौं किनारे बैठि,
वाईजी बिचारी ने अनेकों भक्त तारे हैं ॥

× × × × ×

वाजपेय-यज्ञ से महान विधवा का व्याह,
मानके किसी ने सुता-निज की सगाई की ।
किंतु झूंठे-प्रेम को न जूंठे-पात्र पाल सके,
एक दूसरे को त्याग, तीसरी मिताई की ।।
लीला देख बोला बाप बेटी से, कटाली नाक!
बोली वह कैसे ? बात ये तो है बड़ाई की ।
धर्म की इकाई ताकी आपने दहाई करी,
मैंने किया सैकड़ा तो कौनसी बुराई की ?

× × × × ×

शर्महीन हों जो वही शूर कहलावें जहां,
धर्महीन हों जो वही धर्मध्वज-धारी हों ।
कपटी कुचाली हों जहां पै सभ्य सज्जन औ,
कलही कलंकी त्यों समाज शुचि-कारी हों ।।
पोच औ प्रपंची हों जहांपै पूजनीय पंच,
दंडी औ पखंडी जहां पंडित पुजारी हों ।
ऐसे नर-नारी हों 'दिनेशजू' जहांपै वहां,
पैदा फिर पेटही से क्यों न व्यभिचारी हों ?

× × × × ×

लीन औ अलीन का विवेक है न दीन ही का,
नीयत हमेसा गई पाई बेइमानी में ।
जीजा औ जमाई की कमाई है उड़ाई खूब,
रञ्च भी सचाई है न बुद्धि में न बानी में ।।
नाक ही कटाई है जहां में जहां देखो तहां,
बाना भांति-भाँति के बनाके जिन्दगानी में ।
तोभी बेहयाई से बघारता बड़ाई अरे !
डूब मर उल्लू कहीं चुल्लू भर पानी में ।।

साहब का सपना

सोये थे सशस्त्र आज साहब सजाके सेज,
जाने कौन साइत शनी की साढ़साती में ।
आंख लगतेही लगे देखने 'दिनेश' दृश्य,
लालक्रांति वाले भरी नींद मदमाती में ।।
चौंक पड़ें भ्रम-ही के बम का धड़ाका सुन,
बैठे उठ हाथदे तमञ्चा प्राणघाती में ।
पास ही पड़ीथीं मेमसाहबा विचारी कहीं,
गोली लगी छूट के उन्हीं की तनी छाती में ।।

× × × × ×

एक रोज लौटा घूमघाम के अचानक तो,
होना यों शरीक पड़ा एक बड़े जंग में ।
तंग रास्ते में तोप तीर तलवार ताने,
डटा था ग़नीम पूरे जोशदार ढंग में ।।
देखा जो 'दिनेश' गोला गोली तो सँभाला मैंने,
अपना हथ्यार वहीं भंग की तरंग में ।
क़िला था क़रारा चला दूसरा न चारा तव,
कूदके लगादी वत्ती झट से सुरंग में ।।

× × × × ×

जाकी रसना में होत रोग को सँयोग ताको,
स्वादु मिलता है कहां सोमरस पान में ।
जाकी नासिका की घ्राण-शक्ति है विनष्ट हुई,
उसको मिलैत्रीं है कहां ग़ंध कुसुमान में ।।
जाको तन अतन-विहीन है 'दिनेश' देखो,
वाको सुख-लाभ कौन तरुणी-तटान में ।
जाके नैन नीरस न हेरि सुषमा को सकैं,
उसको मिलै क्या मजा मन्द मुसकान में ।।

× × × × ×

नकटा निलज्ज

कीन्हें बद-कार बेशुमार द्वार-द्वार जाय,
भूलि उपकारपै न नेकु चित्त लायो है ।
विग्रह बढ़ायो औ सतायो दुखियान वृन्द,
वैभव गुमान माँहि मूढ़ इतरायो है ।।
भाषत 'दिनेश' ज्यों ज्यों दुष्ट दल्यो दाब्यो गयो,
त्यों त्यों नीच अधिक निलज्ज ठहरायो है ।
सांचो कै दिखायो जो कहायो कहनूतिन में,
नकटे की नाक पै वि-रूख जामि आयो है ।।

धूर्त

ना है नरराज सुरराज धनराज कोऊ,
ना है गजराज पक्षिराज ना जनायो है ।
भाषत 'दिनेश' भेष नाँहि द्विजराज कैसो,
दंभराज जैसो ये लखात ठीकठायो है ।।
होतो मृगराज तो लखात गजमोती माँद,
याके दरवाज पै तो छीछड़ो गँधायो है ।
कीजिए न देर दौरि लीजिए उधेर यार,
शेरवारी खाल ये सियार ओढ़ि आयो है ।।
× × × × ×

कनौजिया ब्राह्मणों की कला

देखत ही गुप्त चित्रगुप्त को गुमान व्हैहै,
शान सब व्हैहै लुप्त वैभव–विपुल की ।
गिरिजा गणेश त्यों सुरेश शेष शारदा की,
महिमा न रैहै नेकु विज्ञता अतुल की ।।
भाषिबो चहैंगे जो 'दिनेश' विधि व्यासहू तो,
पाइहैं न पारावार कैहूं षटकुल की ।
कोविद कलाविद न कोऊ कहिपैहैं कबौं,
ऐसी वि-कला है कला कान्यकुब्ज-कुल की ।।

× × × × ×

बाल बालिका के व्याह-वाद में भुजंग की-सी,
दान औ दहेज में तुरंग कीसी दुलकी ।
सामुहे सभा के छद्मवेशी स्यार-सिंह की-सी,
कर्म-कर्तव्य में ढकेलू ढुलमुल की ।।
स्वार्थ के प्रसंग में 'दिनेश' शतरंज कीसी,
रीति नीति प्रीति त्यों प्रतीति में वकुल की ।
समुझि परै ना कहां कौनसे समै पै कैसी,
चौकड़ी लगाती चाल कान्यकुब्ज कुल की ।।

× × × × ×

बीघा बिस्वा

कोऊ कहै हानि कोऊ लाभ की बतावै खानि,
कोऊ पहिचानि कहै यामें का बुराई है।
कोऊ कहै तोरि देव कोऊ कहै जोरि देव,
कोऊ बकवाद नाधि आँधि-सी उड़ाई है॥
कोऊ दीनताई की दुहाई दै 'दिनेश' कोऊ-
ठाठ ठकुराई लाय ठानत लड़ाई है।
कान्यकुब्ज-बंश में विवेक की विहीनता सों,
बिस्वन की व्याधि बाढ़ि बीघन में छाई है॥

पूँजीवादी-शासन

पति-वरता हैं भरता हैं भूरि पूंजीपति,
मूंजी-मति ह्वैकै कहो कैसे मुख मोरैं ये ?
स्वामिनी हैं, शासिका हैं, नायिका कुलीन की हैं,
कृषक कुलीन से सनेह किमि जोरैं ये ?
कोसते 'दिनेश' हैं वृथा दे दोष शोषण के,
पोषण के हेतु और किसको निचोरैं ये ?
बोरैं बाँध किसको ? निहोरैं काँध लैकै किसे?
बंधन विधान के बताओ कस तोरैं ये ?

× × × × ×

अन्य दलों के प्रलाप के प्रति

खँडहर के रूप में मिला है देश खंडित व्है,
इसको 'दिनेश' मणि-मंडित बनाएंगे ।
शिक्षा कला कौशल समाज राज अर्थ आदि,
सबका सुधार शीघ्र करके दिखाएंगे ॥
कहते सभी हैं किन्तु करते कोई ही उक्त,
यों तो समालोचक अनेक आप पाएंगे ।
गाएंगे पुनीत गीत त्याग करुणा के किन्तु,
जाएंगे वहां तो भोग आप भी लगाएंगे ॥

कविराज

पातक लिया है नहीं पिंगल विलोकने का,
बेशक कहीं से दश बीस छन्द घोखे हैं ।
भाषा भेष-भूषा में न कम हैं 'दिनेश' कोई,
रीझ बूझ सूझ में सभी में नपे-जोखे हैं ॥
बोले नहीं जौलौं तौलौं आबरू बचाये रहे,
बोले जो कवित्त तो बड़ेही हुए धोखे हैं ।
धारे ताज कोविद-समाज में पधारे आज,
चोखे कविराज एक-एक से अनोखे हैं ॥

× × × × ×

शङ्कर भोला (सवैया)

मुंड की माल गरे विष व्याल,
धरे शशि भाल त्रिलोचन लोला ।
बैल को वाहन शैल को बास,
सुपास को पास न खाट-खटोला ।।
भांग धतूर सरूर में चूर,
मसान की धूर सों धूसर चोला ।
ऐसे महानट रुद्र 'दिनेश',
महेश कहावत हैं तऊ भोला ।।

मुरदे के टाठ

जीवन में जो निभाई यहां,
वही शान वहां भी निभाने चले हैं ।
शंख बजाते हुए बड़े ठाठ से,
स्वर्ग में धाक जमाने चले हैं ।।
रंग 'दिनेश' लखो इनका,
किस ढंग से ऐब छिपाने चले हैं ।
चादर ताने पड़े सुख से,
चढ़ चार के कांधे उताने चले हैं ।।

× × × × ×

भ्रष्टाचारी

सौंप दिया अधिकार जिन्हें,
उनके अपकार अलक्षक हैं ।
भारी भरोस किया जिनका,
वह भ्राता भयानक भक्षक हैं ।।
भाग्य विधाता जिन्हें समझा,
वह त्राता तिरोहित तक्षक हैं ।
ऐसे 'दिनेश' प्रशासन से,
इस देश के राम ही रक्षक हैं ।।

× × × × ×

सोई सुजान सुसभ्य सुपंडित,
जो करि दोष दुराइबो जानै ।
सोई समाज सुधारक है जो,
विशेष कै बात बनाइवो जानै ।।
सोई 'दिनेश' हितू अब जो,
मुँह पै गुन गाय रिझाइबो जानै ।
सोई कुलीन कनौजिया है,
विसुवान में जो विष बोइबो जानै ।।

× × × × ×

दहेज–ठहरौनी

पेशगी पांच हज़ार खरे,
पुनि आँक भरे की खरी बरतौनी ।
एक सौ एक सजा वेलवा,
सब नेग निछावरि और पढ़ौनी ।।
बासन वस्त्र विभूषन आदि,
जड़ावरि तीज घमावरि सौनी ।
यों ठहराय ठगैं ठग आप,
कहैं पर व्याधि बड़ी ठहरौनी ।।

बूढ़े बालम के रूप में बबूल

वायु–विकम्पित शीश सजी अति,
पीले प्रसून की पाग विशाल है ।
उज्ज्वल कंटक–केश कलाप पै,
श्यामता पल्लव की छविजाल है ।।
कृष्ण–कलेवर की कृशता में,
'दिनेश' लता-ललना बनी माल है ।
सावन में यह वृद्ध बबूल,
बना की मिसाल बना क्या रसाल है ।।

× × × × ×

बूढ़े बना

झुकि सात (७) के अंक से बंक भए,
दृग दंतहु ते भठियाय गए ।
सुनि ब्याह तऊ विहँसे बुढ़ऊ,
घर फूंकन पै हठियाय गए ।।
गुनि जोग 'दिनेश' पुरोहितजू,
गुड़िया सी गरे गँठियाय गए ।
पर, लागत ही पटिया पठिया,
बठिया से बना सठियाय गए ।।

विधि ने खूब मिलाई जोड़ी

धूम-सी धौधी बनी दुलही,
कुबरी दोउ आँखिन की चिकचौंधी ।
त्यों वर शूक शनीचर रूप,
अपंग दिनौ जेहि होत दिनौंधी ।।
भाँवरि देत गिरे मड़ये तर,
हेरि हँसे सब दास दसौंधी ।
सासु बगौधी बेंड़ाय उठी,
भहराय पुरोहित पै गिरी औंधी ।।

× × × × ×

आधुनिक गीत-काव्य

सुंदर शब्द सुहावनी शृंखला,
होति कहूंते टसामस ना है।
मौलिक भाव अलौकिक अर्थ पै,
विज्ञ समर्थहू को वश ना है॥
काव्य–कसौटिन की कस में,
अस दूजो 'दिनेश' मिलै कस ना है।
ऐसी अनिर्वचना रचना पै,
मिलै रसना को कहूं रस ना है॥

सफल कवि

दुनियां में रहा बेनवा* कवि जो,
उसके घर चूल्हा-तवा होगया।
वह शेर भी जो था चुराया हुआ,
तक़दीर से सेर सवा होगया॥
डर था कहीं दाद में खाज न हों,
सो 'दिनेश' दुआ से दवा होगया।
दिल से कुल ख़ौफ़ हवा होगया,
जलसे में जहां बाहवा होगया॥

* बेनवा=फ़क़ीर, खानेवदोश।

कवि-सम्मेलन

आई तरंग मिले कछु मित्र,
परस्पर माँहि सलाह भई है ।
खोजि समस्या इतै उत सों,
अख़बारन में छपवाय दई है ।।
प्रेषि निमन्त्रण पत्र 'दिनेश',
कविन्दन-मंडलि बोलि लई है ।
यार मेरे घर बैठि मदार,
बुलावन की यह रीति नई है ।।

कवियों की गति

नहिं विश्व विधान कबौं पलटै,
परमान रहै सब बातन की ।
पर शायर होत सपूत बड़े,
परवा न करैं विधि-बन्धन की ।।
दरसावैं 'दिनेश' कला नित नूतन,
कल्पित सृष्टि रचावन की ।
भगवानहु भूलि रहे भ्रम में,
गति देखि कविन्दन के मन की ।।

× × × × ×

शठ श्रोता

पंडित सज्जन शूर सुजान,
गुणज्ञ मिले उर मोद भरैंगे ।
शीलसने मृदुबैन सुनाय,
सनेह–तरंगन में लहरैंगे ।।
त्यों सनमानि 'दिनेश' विशेष,
निदेश यथोचित शीश धरैंगे ।
पै, शठ सूम शिखंडी सदा,
कवि कोविद का उपहास करैंगे ।।

कामौषधि

चहै वैद्य हकीमन से नितही,
शुचि औषधि लै अविराम करै ।
चहै मेवा मिठाई मँगाय अनेक,
विभूतिन सों धनधाम भरै ।।
उपदेश 'दिनेश' सुनै कितनो,
पै अराम को नेकु न नाम परै ।
इतमाम तमाम चहै जो करै पर,
काम में कामिनि काम करै ।।

× × × × ×

रूपछटा लखि ही–तल शीतल,
होत समान गुनी अगुनी को ।
छाँह छुए रमि जात सबै तजि,
साधु असाधु समाधि धुनी को ।।
पाणि सुपल्लव के परसे,
सुख होत 'दिनेश' अशेष दुनी को ।
ताप नसावन को तन के,
विधि ने विरच्यो तरुनी-तरु नीको ।।

× × × × ×

क़ुरबान हुआ दिल जान से जो,
उसपै अरमान निकारा करो ।
अनजान बटोहिन पै तिरछी,
कसि नैन–कटार न मारा करो ।।
निधनी धनी देख दया करके,
यह हुस्न की हुंडी सकारा करो ।
क़तलाम न यों कर डाला करो,
इलज़ाम ज़रा तो विचारा करो ।।

शृंगार

* रूप माधुरी *

देखतै 'दिनेश' वा सरोज बदनी को वेष,
    बूड़िगे बिचारे नैन मैन के हिलोरे में ।
काहू भांति निकसि अचाका गए कानन लौं,
    लाखन झटाका सहे झूमके झकोरे में ।।
माधुरी कपोलन की चाखि अधरान रस,
    लटकि लड़ी से गए लटकन लोरे में ।
झटकि तहांते गिरे आनिकै उरोजन पै,
    झूलत अजौ हैं परे हार के हिँडोरे में ।।

× × × × ×

गई थी नहाने प्रात सुंदरी सरोवर में,
    तबसे न जाने क्यों दिवाने मुरझाने हैं ।
कोई कहता है अभी कलियां खिली ही नहीं,
    मत है किसी का मुखचंद्र से लजाने हैं ।।
सम्भव हो चाहे, किंतु ध्यान में समाता नहीं,
    दिन में 'दिनेश' वृथा ऐसी अनुमाने हैं ।
सैकड़ों सयाने ख़ाक छाने भेद जाने नहीं,
    देखके उरोज ये सरोज सकुचाने हैं ।।

× × × × ×

विहरै नवेली बाल संग में सहेलिन के,
सर के समीप जहाँ हंस केलि ठाने हैं।
जाय बनमाली तहां छलसों छिपाने, जहां-
सघन निकुंज मध्य मंजुल बिताने हैं॥
औचक 'दिनेश' दौरि जुरिगे दुहूं के नैन,
उमँग्यो अनंग अंग-अंग थहराने हैं।
लोल-लोल बिकसे कपोल मुखमंडल पै,
उकसे उरोज, पै सरोज सकुचाने हैं॥

× × × × ×

अंग उजराई सुघराई रूप यौवन पै,
कोटिन मनोज-मान लाजन दले रहैं।
चखन चितौनि चारु चंचल चलाके लखि,
चपल कुरंग पौढ़ि पाँयन तले रहैं॥
तैसेई 'दिनेश' वर-वसन विचित्रता पै,
चतुर चितेरे हाथ आपनि मले रहैं।
अरुन सुरंग मंद मधुर सुगंधिन सों,
मुख अरविन्द पै मिलिन्द मचले रहैं॥

× × × × ×

नवल किशोरी गोरी भोरी सुकुमारि अंग,
अमित अनंग रस रंग ढंग ढरिगो।
हीरन जटित मणि मोतिन कलित हार,
ललित उज्यार भुवि व्योम लौं बगरिगो।।
बसन दशन दुति हँसनि 'दिनेश' मृदु,
चखन-चितौनि लखि हीय-हंस हरिगो।
भरिगो अमंद मकरंद अंगरागन सों,
देखि मुखचंद मुख-चंद मंद परिगो।।

× × × × ×

कोमल कपोल लोल उन्नत उरोज गोल,
आभा रंग रूप देखि लाजै रति मान में।
लोचन ललाम नाभि त्रिवली लहरि लेति,
लचकि लता-सी जाति लंक लचकानि में।।
दाड़िम दशन वर-वसन विचित्र चारु,
चमकैं 'दिनेश' जनु दामिनि दिशान में।
मदन–मतंग अंग मारत उमंग मन–
मोहति मयंकमुखी मंद मुसकान में।।

× × × × ×

नागरि नवेली अलवेली रूप यौवन में,
अंगनि अनंग-ती सों सरस सजीली है ।
ढीली है गयंद गति देखि हंसगामिनी को,
केहरि लुकात लेखि लंक लचकीली है ।।
बरनौं 'दिनेश' वा सुवेश सुषमा को कहा,
कहांलौं सराहौं कौन-कौन गुनशीली है ।
आँखि है लजीली तीखी तकनि गँसीली बंक,
भृकुटि कटीली मंद हँसनि रसीली है ।।

× × × × ×

नवल किशोरी खड़ी महल अटा पै सजे-
सोरहो सिंगार अंग पूरित अनन्द है ।
मंद है अँध्यारी कुहूनिशि की अनंत, दिव्य-
आनन उज्यारी किए चांदनी दुचन्द है ।।
तैसेई 'दिनेश' दुति वसन-सितारन की,
तारन की ज्योति सी अलौकिक अमन्द है ।
मानो नीलनभ में नछत्रन समेत आज,
उदित भयो ये नयो पूनम को चन्द है ।।

× × × × ×

छूटे केश–पाश विधु–बदन विकासमान,
दीप्यमान दशन दमक दरशाते हैं ।
बसन विचित्र रत्नजटित विभूषण त्यों,
पूषण–प्रकाश से अदूषण दिखाते हैं ॥
लोचन निमेष हीन अति अनुराग लीन,
रसिक जनों में ज्योति-जीवन जगाते हैं ।
मंद-मंद हास के 'दिनेश' मृदु मंजु भाव,
अंग में अनंग की उमंग उपजाते हैं ॥

× × × × ×

ललित लतासी खासी, दीपक शिखा सी चारु-
भासी अंग-अंगन अनूप उजराई है ।
पाई समताई ना लुनाई रंच रम्भा रति,
सुषमा शची की लची लेखि सुघराई है ॥
आई रास खेलन कन्हाई पै सखीन संग,
निशि में दिवा सी त्यों 'दिनेश' दरशाई है ।
आजु ब्रजरानी के मयंक-मुख मंडल सों,
शरद-जुन्हाई ते छगूनी छटा छाई है ॥

× × × × ×

आगत पतिका

विविध विलास की विभूति विधि की है याकि,
मंदिर-मिलाप में कलोल कामुकता की ।
किंवा चित्तवृत्ति के प्रशांत प्रेमसागर में,
तरल तरंगित उमंग इच्छुकता की ।।
चिंता की दशा का चारुचित्रण है चिन्हित की,
भावना 'दिनेश' है विशेष भावुकता की ।
प्रकट-प्रसन्नता की पूर्ति है प्रभावमयी,
अथवा अनूप मंजुमूर्ति उत्सुकता की ।।

× × × × ×

भारती समान किन्तु धारती न धीर उर,
बार-बार सेज साज मंदिर सुधारती ।
द्वार-देश मध्य मंजु मूर्ति ममता की खड़ी,
कर सों 'दिनेश' केश कुंचित सँभारती ।।
अमित उमंग से सुढंग से सप्रेम बाल,
लाल के मिलाप हेतु आरती सँवारती ।
चंचल चकित चित मुदित मयंकमुखी,
द्रवित दृगों से पंथ कंत को निहारती ।।

× × × × ×

आछे-आछे बसन विभूषन जटित अंग,
शोभा की तरंग मान रति को रितै रही ।
सुघर सहेलिन की रस-रँग रेलिन सों,
बिहँसि लखाय प्रेमपूरित हितै रही ।।
मधुर मिलाप की 'दिनेश' अभिलाष भरी,
कनक-छरी सी खरी विरियां वितै रही ।
चर्चित चमेली चोय चंदन सों चंद्रमुखी,
चंचल चखों से चोपि चन्द्रहिं चितै रही ।।

प्रोषितपतिका

सुनिकै 'दिनेश' प्रानप्यारे को विदेश गौन,
भौन में विहाल परी बाल बिलखति है ।
सुख के सुमेरु सों गिरी है शोकसिंधु मांहि,
लहति न थाह आह-वायु सों बहति है ।।
मिलन-बहोरि की लगी है आशडोरि ताकी–
टुक झकझोरि सों भरति उघरति है ।
नागरि नवेली यों वियोग दुखसागर में,
गागरि समान बूड़ि-बूड़ि उमंगति है ।।

× × × × ×

दूती वाक्य

लाल चलि देखौ परी निपट बिहाल बाल,
रावरी दया सों जिया आश बँधि जावैगी ।
सुनिकै विदेश गौन जौन विधि मौन भई,
तौन गति पेखे नीच मीचहू डरावैगी ।।
कछुक 'दिनेश' वामें सांस अवशेष रही,
फूल सी परी को ताप तूल सी जरावैगी ।
दहँक उठेगी आगि हाय महिमंडल में,
भूलिहू कहूं जो एक आह कढ़ि आवैगी ।।

बसंत

संग में सहेली के नवेली गई कुंजन में,
सुख सों विहार हेतु, भोरी भूरि ख्याल की ।
देखत ही किंशुक कदंब अंब झौंरन को,
भागिगो बिलास जागी बिरहागि बाल की ।।
जानिकैं बसंत त्यों 'दिनेशजू' विदेश कंत,
बिकल पुकारै लगी, आली बोलु पालकी ।
भागि चलु भौनै बेगि बाग ते अरीरी देखु,
पंजरी जराये देति मंजरी रसाल की ।।

× × × × ×

हेमंत

शीतल समीर लागै तीर के समान ताकी–
पीर सों अधीर व्है शरीर थहराता है ।
पाता है न त्रान प्रान काहूविधि यासों ऐसी–
विषम व्यथा सों वृथा त्रास दे सताता है ।।
होते जो 'दिनेश' प्राणप्यारे ना विदेश मांहि,
हौंहू देखि लेती कौन भाँति तलफाता है ।
जानता विरुद्ध है विरंचि मोंसों ऐरी सखी!
तासों ये मनोज-मीत शीत ही-कँपाता है ।।

पावस

ऐ अलि! हमारो अंत होत बिनु कंत वैसे,
दूजे आनि पावस चुभावे तन कीली है ।
कूक-कूक कोयल करेजो टूक-टूक करै,
चपला चलावै हिये शूल चमकीली है ।।
नाहक 'दिनेश' भरमावै मों वियोगिनि को,
मेघन दुराय कहै धूम धुँधरीली है ।
चाह भरे चातक मयूर करि शोर कहैं,
उनई घटा ये घनी वारि वरसीली है ।।

× × × × ×

कौन की पठाई आई बागन विहाई इतै,
बैठिकै अँटा पै छटा कौन दरशाई है ।
सुनिकै तिहारी कूक हूक उर मांझ उठै,
टूक-टूक होत हियो जाति थिरताई है ॥
मरम बतायदे 'दिनेश' निज आगम को,
भरम मिटायदे सुनाय कुशलाई है ।
दैहौं तोहिं आदर अनेक विधि प्यारी पिकी,
जोपै प्रानप्यारे को सँदेश-शुभ लाई है ॥

× × × × ×

माघुरे रसीले तीखे सुंदर सु-स्वाददार,
भोजन सुगंधदार हिय हुलसावैं ना ।
शैय्या ना जुन्हैया नाहिं मेवा औ मिठैया कछू,
कहा कहौं दैया दुःख रंचहू दुरावै ना ॥
बालम विदेश याते देखिए 'दिनेश' मोहिं,
कामद बसंती चीर चोरि चित पावैं ना ।
पानन की पीकैं नैन काजर की लीकैं कुंज–
क्वैलिया की कूकैं झूकैं पौनहू सुहावैं ना ॥

× × × × ×

खण्डिता

बांकी बड़ी बानक वनी है आज भोरही तैं,
दैखिकै 'दिनेश' छवि छाती हुलसति है ।
ढीली-ढीली पाग की गँसीली पेंच पेखत ही,
सौतिन हिये की आश-बेलि झुलसति है ।।
गोल-गोल कौंल से कपोलन पै पान पीक,
जावक की लीक भाल बीच विलसति है ।
लाल-लाल अधर अमोलनपै कालिमा त्यों,
लोल-लोल लोयन में लालिमा लसति है ।।

लक्षिता

विथुरि परी है बेनी भालहू सिंदूर बिन्दु,
अलकावली की लट क्योंन सुरझाव री ।
पलकैं न पलटैं त्यों झलकैं नखनि चिन्ह,
काजर धुयो-सो भयो सो किन लगाव री ।।
भूषन बसन सब शिथिल लखात अंग,
कौन सो 'दिनेश' यह ढंग दरशाव री ।
लाग री कपोलन पै अधर अमोलन पै,
बावरी तमोलन के दागन दुराव री ।।

× × × × ×

शुक्लाभिसारिका

बन्दन को बिन्दु इन्दु आनन विकासमान,
भासमान भूखन मयूखन के जाला सी ।
सुमन सुगंध दिव्य बसन अनूप अंग,
शोभा की तरंग सों उदोत शशिबाला सी ।।
मदन उमंग सों 'दिनेश' पदकंज मंजु,
मंद-मंद धरति मतंगिनी विशाला सी ।
जटित जवाहर सों जगमग होति बाल,
जाति यामिनी में चली ज्योति-ज्वालमाला सी ।।

रतिप्रीता (पावस)

दूंदनदै दादुरन, झिल्लिन झखनदै री !
पी-पी की पुकार पपीहन कौं करन दै ।
मोद सों मचावनदैं घोर शोर मोरन कौं,
जोर बाँधि जुगनू-जमाति चमकन दै ।।
गावन मलार दै सुरीले कंठ आलिन कौं,
उनहू की नेह-नदी बढ़िकै बहन दै ।
जौलौं अंक मेरे हैं 'दिनेश' मनभावन री!
तौलौं घन सावन कौं घेरि बरसन दै ।।

× × × × ×

बोलत न मोसों, भेद खोलत न तौहूं सन,
तैंही कहु यामें कौन मेरी तकसीर है ?
सोच है गँभीर जासों सूखत शरीर बीर !
रहति अधीर पीर उरमें गँसी रहै ॥
राखत 'दिनेश' हैं हमेश हित, भाखति तैं,
तदपि बताउ क्यों अप्रीति सरसी रहै ?
चाहत न आनै, जिय साँचो यह जानै, पर–
औरन हिये तो छबि उनकी बसी रहै ॥

× × × × ×

पलक पलोटत ही औरै रूप-रंग होत,
औरै होत अंग ढंग औरै दरशात है ।
पीन होत खीन लघु दीरघ दिखात गात,
छीन लेत दूजे सन पाय जनु घात है ॥
या बिधि 'दिनेश' बाल बदन विकास होत,
भास होत भाव औ न भेद प्रकटात है ।
जाति है परेखी काहू भांति न अनोखी छटा,
बार-बार देखी अनदेखी होति ज्ञात है ॥

× × × × ×

नेत्र (कुटिल-कटाक्ष)

गल जाय सकल गुमान ज्ञान गुनियों का,
ध्यान मुनियों का एक पल में विचल जाय ।
ढल जाय प्रबल प्रताप देव दानव का,
मानव समूह का समूचा जोम जल जाय ।।
टल जाय अटल 'दिनेश' बल शंकर का,
काल से भयंकर का अंतर दहल जाय ।
मल जाय मंदर समंदर उबल जाय,
अगर कटाक्ष की कटारी कड़ी चल जाय ।।

सन्देहालङ्कार

कीधौं सुधासिंधु, श्याम बिन्दु इन्दु आनन के,
कीधौं मकरंद भरे कंज गरवीले हैं ।
कामिनी-लता के कीधौं सुंदर सुमन स्वच्छ,
कीधौं कमनीय कांति-दीप दरशीले हैं ।।
गंजन 'दिनेश' मद खंजन कुरंगन के,
कीधौं मीन भृंगन के छन्दन छरीले हैं ।
कीधौं मैन-मंदिर के मंजुल मणीन-द्वार,
कीधौं लाड़िली के लोल लोचन लजीले हैं ।।

× × × × ×

करते कला हैं कलाधर के करेजे पैठि,
हरते सभी के चित्त चेटक में चोखे हैं ।
कंचनलता पै नीलकंज से खिले हैं लोल,
बोल से रहे हैं नेह-नीर-निधि पोखे हैं ॥
समता 'दिनेश' क्या करैंगे मृग मीन भृंग,
रूपरंग आदि में अनूप हैं अदोखे हैं ।
गजब गरूर भरे नूर के सरूर भरे,
अंजन लगे ये नैन खंजन अनोखे हैं ॥

× × × × ×

मिलि जाँय जासों ताहि मारैं बंक-टंक ही सों,
अनमिल मारैं दया नाहिं उर धारे हैं ।
सुधि बुधि खोय जात, देह गेह दोय जात,
लागि जात जाके तन तीर से करारे हैं ॥
भाषत 'दिनेश' कवि उपमा वृथा ही देत,
खंजरीट मीन मृग कंज अनुहारे हैं ।
शालिग्राम ऐसे साधुदेव कहुं होते कूर !
जैसे निरदई नैन बधिक नकारे हैं ॥

× × × × ×

सन्देहालङ्कार

कीधौं रही चमकि प्रदीप की शिखा सी चारु,
चंद्र की मरीची परी वारि बीच बीची में ।
दमकि रही है कीधौं जुगनू जमाति जुरि,
हरित लतान ओट सघन बगीची में ॥
अथवा 'दिनेश' पारदर्शी-यंत्र द्वारा कढ़ि,
परति प्रभा की द्योति तिमिर प्रतीची में ।
कीधौं नील-घूंघट में ज्योति नयनों की मनो,
थिरकि रही है बिज्जु वादर दरीची में ॥

उरोज

सोहने सलोने पीने चीकने सु-आबदार,
गोल–गोल सम्पुट–सरोज अनुहारे हैं ।
उन्नतपने सों कंचुकी के वंद तोरे देत,
हिय में हिलोरें देत मानो मतवारे हैं ॥
भाषत 'दिनेश' गौर गात–गदरे पै गँसे,
गजब गरूर भरे बैठे मौन धारे हैं ।
मैन के सँवारे जियै चैन दैनहारे, रूप–
यौवन उज्यारे ये उरोज सुखकारे हैं ॥

× × × × ×

भालबिंदी (संदेहालंकार)

पावन पियूष हेत आनन समीप गई,
भूली मणि व्याली तहां अरुण उज्यारी की ।
कीधौं अरविंद मध्य इन्द्र की वधूटी लसी,
बूटी-सी लखात लोल गोल अनुहारी की ॥
कीधौं कलधौंत को 'दिनेश' मृग-अंक मानि,
काहू कामिनी ने पूजि बन्दनी–लिलारी की ।
कीधौं लाल लाल मंजु मानिक विशाल ऐसी,
ही-की करै चिन्दी भाल-बिन्दी नौल नारी की ॥

दूती वाक्य

काह धौं भयो है तोंहि जानि ना नवेली जाय,
जासों ये तिहारी बुद्धि सारी हरी जाति है ।
खाति है न बीरी, सतराति है खड़ी री, लागि–
कौन सी लगी री जो सँसी यों मरी जाति है ॥
मानिले कही री, चलु कान्ह पै भली री अरी!
ऐसी कहूं हठ की हँसी री करी जाति है ।
सोग सों वियोग ही के होति देखी पीर, तैं तो–
सोच में सँयोग ही के सीरी परी जाति है ॥

× × × × ×

बिरही नायक

भावत न भौन है, न चैन शैन-सेजन पै,
बाढ़ति वियोग-व्याधि नूतन नितै-नितै ।
कहत 'दिनेश' न विशेष कछू काहू सन,
सहत कलेश रैनि ब्याकुल बितै-बितै ॥
कंटकित होत गात लागे पौन बाजे पात,
फिरि-फिरि जात चक्षु चंचल जितै-तितै ।
चौंकत चकोर-लाल बाल बिनु चक्कृत ह्वै,
यामिनी में कामिनी सी चांदनी चितै-चितै ॥

विषयानन्द

वाटिका विशाल बेमिसाल बँगला के बीच,
विविध विलास के सुपासन करे रहैं ।
त्रिविध समीर के स-नीर झकझोरन में,
झूमि-झूमि यौवन के जोरन भरे रहैं ॥
मुदित 'दिनेश' मंद मंद झरि-बुन्दन में,
कुन्दन-कपोल कंज-कर पै धरे रहैं ।
सोई सुखशाली जौन या-विधि सु-पावस में,
काहू अंक लागिकै प्रयंक पै परे रहैं ॥
× × × × ×

अनुपयुक्त उपमा

कमनीय कामिनी बनाने में सुकवि लोग,
बहुधा पड़ जाते हैं बड़ेही कुढंग में ।
मुख को मयंक से मिलाते कहीं पंकज से,
बेणी को भुजंगिनी बनाते कहीं अंग में ॥
कुच को 'दिनेश' कुंभ दुंदुभी नितंब त्योंही
आँख के सुरंग को मिलाते हैं कुरंग में ।
सच्ची सुषमा की कहीं पाते उपमा हैं नहीं,
डूबते वृथाही कच्ची-कल्पना-तरंग में ॥

रास में प्रकाश

आयो मनभावन सुहावन समय जानि,
नीलम समान भयो अमल अकाश है ।
शरद मयंक की छटा सों कुंज शोभावंत,
सुन्दर द्रुमावली सुहात आस-पास है ॥
ऐसी अति नीरव मनोरम निशा के मध्य,
ठान्यो है ब्रजेश ने 'दिनेश' रंग-रास है ।
चंद को प्रकाश गोपीवृन्द को प्रकाश राधे-
श्याम के प्रकाश सों प्रकाश ही प्रकाश है ॥

× × × × ×

सवैया (रूप माधुरी)

पद्म–प्रसून लखे बहु बार,
अनार अनेकन की सुघराई ।
विद्रुम बिम्ब फलादिक त्यों,
मणि माणिकहू की ललाम ललाई ॥
आब–गुलाब 'दिनेश' लखी,
अरु गोरिन–गाल गुलाल लुनाई ।
पाई नहीं पर ऐसी कहूं,
अधरान लसी मधुरी अरुणाई ॥

अज्ञात यौवना

चलि जावती हैं चहुं ओर तऊ,
कहूं नेकु नहीं थिर पावती हैं ।
बिनु कारन त्यों गुरु लोगन के,
परिकै समुँहे सकुचावती हैं ॥
कहु भेद 'दिनेशजू' आलि ! कछू,
जेहिको न कोऊ बतरावती हैं ।
करतीं रस की बतियां सखियां,
अँखियां क्यों मेरी भरि आवती हैं ॥

× × × × ×

प्रोषितपतिका

दादुर को दल बोलि उठ्यो,
उर चीरैं भईं सुनि वाकी पुकारैं ।
तीर-सी तीखी लगैं त्यों 'दिनेश'
सुगंध सनी पुरवा की झुकारैं ।।
पीर गँभीर करै परि कानन,
प्रानन में मोरवा की हुँकारैं ।
धीर धरौं किमि बीर बताउ,
अधीर करैं धुरवा की धुकारैं ।।

दूती वाक्य

अनुराग भयो बड़ी भागिन सों,
बनि बावरी ताहि न तैं पहिचानैं ।
हितहू की कहेते न मानै अरी,
उलटे भृकुटीन कमाननि तानै ।।
हिय होति न प्रीति तिहारी जुपै तो,
'दिनेश' न यों समुझावती आनै ।
हठ ठानै, न मानै, अयानै अजौं,
रस में बस तैं बिष बोइबो जानै ।।

× × × × ×

खण्डिता

औधि बदी निशि आवन की,
ढिग आनहिं जाय मनोज गँवाए ।
भोर 'दिनेश' उदै लखिकै,
भजि आए इतै डरपाइ चवाए ।।
बानि छिछोरि न छूटि अजौं,
जिमि लील को दाग धुवै न धुवाए ।
पूज्यो न प्रेम प्रिया-निज को तो,
कहा फल नैनन पान खवाए ।।

अन्योक्ति

कमनीय लता लखि कामिनि की,
केहि काज भ्रमों किन घातन में ?
तजि कुंज-लता तरु-पुंज घने,
अनुराग सने युग–पातन में ।।
तुव-अंग कठोर 'दिनेश' कहूं,
गड़ि जाइहैं कोमल गातन में ।
तेहिते करि दाया मिलिन्द अहो !
कहुं अंत रमो जलजातन में ।।
× × × × ×

अपन्हुति

लखिकै लतिका मणि कंचन की,
गनिबो बिरथा बनिता-गन में ।
बनिबो बपुरो मुखकंज कहे,
यह मंजु मयंक उयो तन में ।।
झखिबो है 'दिनेश' उरोज कहे,
चकवाक लसे फँसि फंदन में ।
कहिबो भ्रम है चख-चारु इन्हें,
युग राजत भृङ्ग सरोजन में ।।

× × × × ×

लागति जाय न अंक निशंक व्है,
तैं तो रही दुरि लाज की मारी ।
कोसति बाँसुरिया को वृथा, नहिं–
जानति भेद गुवारि गँवारी ।।
सीखले सीख 'दिनेश' अरी ! वह–
होति छिनेकु न अंग ते न्यारी ।
तौ कस होय न वा गरिमा-गिरि ?
जा–मुख चूमि रहे बनवारी ।।

× × × × ×

मान-मनावन

जीवन में जुटता बड़ी भाग्य से,
यौवन का यह मोहन-मेला ।
ले चुकीं मोल हमें बिन मोल तो,
तोल का व्यर्थ करो न झमेला ।।
मान लिया शह-मात 'दिनेश'
समाप्त करो बस मान का खेला ।
जा रही रात सिरात प्रिये ! अब,
आरही देखो प्रभात की बेला ।।

हर्षोल्लास

अँठिलाती हुई अलबेली लता,
लहराय समीर के झूंकन झूली ।
उनमत्त हो यौवन में कलिका,
अनुराग-पराग बिखेरती फूली ।।
छबि छाई 'दिनेश' दिगंतन में,
कविताई पै जाति निकाई न तूली ।
मधु पीके प्रमत्त हुई मधुपी,
पिकी पी-के पुकारिबे में सुधि भूली ।।

× × × × ×

विप्रलब्धा (वंशस्थ छन्द)

विलोकनीया रमणी सुरूपिणी ।
नितान्त भोरी सुषमा विभूषिणी ।।
लुभावनी काममयी तरंगिणी ।
सुधांशु-सी प्रेमसुधा प्रवर्षिणी ।।

अनूप आभूषण अंग-अंग में ।
सजे सजीले अतिही सुढंग में ।।
दुकूल भी रंजित चारु रंग में ।
तरंग दूनी करते उमंग में ।।

अतीव शोभायुत मंजु वेश से ।
अनंग आवेश तथा प्रवेश से ।।
चली अकेली गृह के प्रदेश से ।
ब्रजांगना यों मिलने ब्रजेश से ।।

प्रधान थे जो पथ नंदग्राम के ।
जँचे सभी बाधक सिद्धि-काम के ।।
अतः जहाँ थे जन भी न नाम के ।
गई वहीं से ढिग कुंज-धाम के ।।

नवीन पत्तो फल पुष्प पुंज से ।
हरे भरे बृक्ष लता निकुंज से ।।
घना वना था तृण-कास-मुंज से ।
सुहावना था वन भृङ्ग गुंज से ।।

समस्त जो केलि-थली वहां रहीं ।
विलोकने से उसके बची नहीं ।।
मिला न प्यारा पर कुंज में कहीं ।
रुकी दुखी हो तब अंगना वहीं ।।

अपार चिन्तायुत शोकलीन हो ।
दिए कपोलों पर हाथ दीन हो ।।
फिरी भ्रमी-सी रति आशहीन हो ।
मृणाल-सी मंजुमुखी मलीन हो ।।

इसी दशा का यह शब्द-चित्र है ।
सु-भावना भूषित सच्चरित्र है ।।
प्रवीण प्रेमी-जन का सु-मित्र है ।
'दिनेश' देखो कितना पवित्र है ।।

विविध-विषय

प्रभात

आगम प्रभात का विलोक के विहंगावली,
कंठ से सुरीले गीत गान करने लगी।
अस्त तारिकाओं का समस्त कोष लूटि-लूटि,
ओस मोतियों का रंगरूप धरने लगी॥
आनँद विभोर हो 'दिनेश' भव-आतप को,
मंद-मंद मारुत हिलोर हरने लगी।
अरुण पराग लेके प्रकृति-प्रिया के भाल,
ऊषा अनुराग से सुहाग भरने लगी॥

राजनीतिक प्रभात

अम्बर के तारे, रहे हाकिम हँकारे जौन,
धाम को सिधारे मान मन में मलीनता।
सत्याग्रही-शूरमा सरोज पुंज फूले फूल,
जानके 'दिनेश' कूटशासन की हीनता॥
अरुण-अराति सों डराति त्यों पराति जात,
रात की अँध्यारी महाकारी की प्रबीनता।
मानों देखि लाली भव्य भारती पताका बीच,
भागी जात प्राची ते पिशाची पराधीनता॥

× × × × ×

पावस

झमकन लागी अँधियारी चहुं ओरन तैं,
चमकन लागी चढ़ि चपला खराद-री ।
झुमड़न लागीं झुकि झांड़ी लतिकान संग,
उमँड़न लागीं नदियाहू करि नाद-री ।।
दरशन लागी त्यों 'दिनेश' दुति दूनी मंजु,
परसन लागी पौन सीरी लै सवाद-री ।
हरसन लागीं हिये सरसन लागीं नेह,
बर-सन लागीं बाल बरसन बादरी ।।

बसंत

मौरै लगी मल्लिका, झकौरै लगी मंद पौन,
दौरै लगी भौंर भीर, बौरै लगीं आमिनी ।
नाचैं लगीं कंचनी, कुरंगिनी कुलांचै लगीं,
जांचै लगी मानिनी सँजोग-जोग जामिनी ।।
आंचैं रति-कंत की बसंत की सु-पांचै लगी,
बांचै लगीं पाती लै 'दिनेश' हंसगामिनी ।
हूकै लगीं बिरही छटूकै लगीं छाती होन,
कूकै लगीं कोकिलै कलोलै लगीं कामिनी ।।

× × × × ×

जाय ना नवेली न्हान यमुना अकेली, अरे !
गैल में मची है रंगरेली ग्वालबाल की ।
कौन की मजाल जौन कीच की उछाल खाय,
जाल की न मीन होय मदनगोपाल की ।।
हाल की मिसाल है 'दिनेश' बतलाऊँ तोहिं,
जौन गति कीन्हीं कान्ह भोरी ब्रजबाल की ।
दरद न लाय धाय भुजन फँसाय लीन्हीं,
गाल पै लगाय दीन्हीं गरद गुलाल की ।।

× × × × ×

होली की ठठोली लगै गोली सी गले में जिन्हैं,
उनको भलेही जँचे रंगत बवाल की ।
प्रेम के पुजारी किंतु ऐसी मनहूसी कभी,
करते पसंद नहीं मन के मलाल की ।।
घोलते 'दिनेश' वे हमेशा रंग लालोलाल,
बोलते अमोल है इलाज बे-मिसाल की ।
खोलते बखूबी खूबी ढोल पीट गाते सदा,
मरद बनाती अरे गरद गुलाल की ।।

× × × × ×

होली की बहार मांहि हुलसि हुलासन सों,
मिलहिं सप्रीति कंठ-लागि बंधु संग में ।
द्वेष बिसरावैं दरसावैं अनुराग राग,
अरुण-अबीर मेलि रोली मुख अंग में ।।
लहति 'दिनेश' जासों संतति पुनीत-सीख,
बिगरै चरित्र नाहिं परिकै कुढंग में ।
विमल बसंत पाय गीत गुनवंत गाय,
भेद-भाव दें भगाय बोरि प्रेम-रंग में ।।

× × × × ×

माता के समान पूजनीय जेठ-बंधु-तीय,
ताहि देत गारी नाहिं लाजत जहान में ।
बेटी बुआ ताई माई बहिन विचारैं नाहिं,
गावत कबीर कूर फूहर ज़बान में ।।
लाखन सिखापन औ भाषन 'दिनेश' देत,
मानत न नेक नीच नकटे गुमान में ।
देख-देख हालत, दै नालत हैं रोय रहीं,
देहरी की लाज गहे मेहरी मकान में ।।

× × × × ×

हेमन्त

धाम-धाम आम कुहराम सा मचा है, छाया–
चारों ओर घोर कोहरे का यों घनत्व हैं ।
विश्व के बिचारे सारे जीव जड़ जंगमों में,
प्रकट जमाए हुए अपना अहमत्व है ।।
मानते 'दिनेश' हैं निदेश तेज पावक त्यों,
पृथ्वी जल वायु व्योम आदि पर स्वत्व है ।
संत बलवंत राव रंक सभी काँपते हैं,
व्यापक अनंत यों हिमंत का महत्व है ।।

ऋतु-संघर्षण

तानिकै तुषार-तेग अंत अवनी को चह्यो–
करिबो हिमंत शीत–तंत उपजायो है ।
ताके कूर–दंत तोरि सुखद बसंतजू ने,
नूतन सुरूप दै सुभूषन सजायो है ।।
तैसेई 'दिनेश' करि ग्रीषम गरूर चूर,
पावस–बली ने शांति–वारि बरसायो है ।
मानहु नृशंस–नृप शासन नशाइबे को,
विधि ने विशुद्ध साम्य-भाव सरसायो है ।।

× × × × ×

अन्योक्ति

जाके संग अमित अनंग-रंग भीन्यो मत्त,
लीन्ह्यों है स्वछंद स्वाद सिगरे सुखन का ।
वाही के वियोग को विषाद बिसरैबे काज,
बावरो सों फिरत बटोही बन्यो वनका ।।
बैठ्यो नाहिं तोपै है 'दिनेश' रस लेबे हेतु,
एरे फूल किंशुक गरूर तजु मन का ।
आयो तोहिं जानिकै दवागि जरि जाइबे को,
चंचरीक चाहक चमेली के सुमन का ।।

चन्द्रिका

मंजुल–मयंक–मुख खोल हँसती है जब,
भू–पर विलास का विधान ठन जाता है ।
किरणें पसार अभिसार करती है जहां,
व्योम लों प्रकाश का वितान तन जाता है ।।
मुग्ध हो 'दिनेश' विश्वमोहनी विभावरी में,
मानिनी प्रिया का छूट मान-प्रन जाता है ।
श्वेत-चांदनी सी चारु चंद्रिका विलोकतेही,
मोर मन चंचल चकोर बन जाता है ।।

× × × × ×

राम-मानस

ढाए देति भौ–भय नशाए यम–त्रास देति,
छाए देति शांति सुख सम्पदा बसाए देति।
पापन दराए देति तापन मिटाए देति,
शापन बचाय पुण्य–सरिता बहाए देति॥
धन्य है 'दिनेश' धन्य रामचन्द्र–मानस तैं,
विश्व को विशुद्ध प्रेम पाठहिं पढ़ाए देति।
महिमा तिहारी कौन विधि मैं बखानौं, अहा!
स्वर्ण--बर्ण–बूंदन पियूष बरसाए देति॥

तुलसी-माहात्म्य

संतति सुशील सदाचारी जो बनाना चहौ,
नेम सों सप्रेम राम-मानस पढ़ाइए।
मोद-सों महीं-पै सुखी रहिबे की हौस है तो,
काहू जीवधारी कर, जीव न दुखाइए॥
सम्पति सुगति शक्ति सुषमा सुयश शांति,
चाहत 'दिनेश' जो, तो धर्महि बढ़ाइए।
है जो अभिलाष हिये, पाऊँ हरि-दर्शन तो,
लैके नित्य ईश-शीश तुलसी चढ़ाइए॥

× × × × ×

गंगा गौरव

गंगे ! देखि तेरो ये चरित्र पुहुमी पै चारु,
सुषमा अपार धार महिमा महान की ।
गावत गुणानुवाद आवत मही के लोग,
छावत छटा हैं तीर-तेरे पुण्य-दान की ॥
धावत 'दिनेश' देव नभ में बिमान बैठि,
मुदित लगाए झरी दिव्य-पुहुपान की ।
त्योंही गेह छूटी-सी सनेह–सुख लूटी महा,
टूटी परैं व्योम ते बधूटी देवतान की ॥

चण्डिका कृपाण

दामिनी समान दशो-दिशि में दिखान लागी,
म्यान-तैं कबैधौं कढ़ी ? जानी नहीं आन ने ।
उरन समान लागी रुधिर नहान लागी,
खान लागी शत्रुन, न पाई त्रान प्रान ने ॥
घोर घमसान सों परान जातुधान लागे,
शान त्यों 'दिनेश' लागे देवता बखानने ।
काटि खंड खंडन सों झुंड, रुण्ड मुंडन की,
मंडी-सी लगादी मातु चंडी की कृपान ने ॥

× × × × ×

अतीत-स्मृति

अवनि वही है वही आदिम है आर्य जाति,
भारत वही है वही शोभा आसमान की ।
भवन वही हैं वही पवन प्रवाहित है,
बन भी वही हैं वही लीला भगवान की ॥
ध्यान भी वही है दानमान भी वही है मंजु-
तान भी वही है ऐ 'दिनेश' गुणगान की ।
सरयू वही है वही सूर है शशी है वही,
अवध वही है पै न हैं वे राम जानकी ॥

गायों की दशा

शेष औ सुरेश त्यों 'दिनेश' अवधेशहू ते,
प्यारी थीं विशेष जौन विश्व-विरचैया के ।
विविध बलैयां पाय मोद सों उमंग भरी,
खेलतीं सदा थीं जौन संग में कन्हैया के ॥
प्रानन पलैया पाप-पुंजन दलैया जौन,
मैया ते महान हुतीं चोटी रखवैया के ।
तेई पूज्य गैया आज संकट-समैया बीच,
दैया-कै कटातीं शीश काठ पै कसैया के ॥
× × × × ×

सम्पति–सुमेरु का विकास कृषि-कानन में,
करके दिखातीं दृश्य दीन को महल का ।
खाके तृण तोय को पियूष सा पिलाके दूध,
बंद कर देतीं नैन-नीरजों का ढलका ।।
ऐसे उपकारी मूक जीव को 'दिनेश' देखो,
देखते तुम्हारे दंड होता है क़तल का ।
तोभी नहीं रोकते विनाश इनका हो, अहो!
ह्रास हो न क्योंकर तुम्हारे धन बल का ।।

× × × × ×

गोकुल रहा न वह भूमि ब्रज की-ही रही,
रही ना निशानी शेष नंद-हू के धाम की ।
गोपी ग्वाल आदि भी न देख पड़ते हैं कहीं,
छाया तक दृष्टि में न आती बलराम की ।।
अबतो 'दिनेश' आसरा है इन्हें आप ही का,
माला फेरती हैं नित्य आपही के नाम की ।
फिर भी न लाएं ध्यान आप यदि होके धनी,
जाएं यह बोलो कहां गायें घनश्याम की ?

× × × × ×

श्रीगणेश-बन्दना

चकित निहारैं भाल चन्द्र की अनोखी छटा,
छकित 'दिनेश' छबि रञ्जित-रदन की ।
सुकृति सँभारैं तन-सुरति बिसारैं मोहि,
प्रीति उर धारैं मंजु-पंकज-पदन की ।।
गोद गिरिजा की हेरि-हेरि मनुहारैं करैं,
शुंडिका समोद गहि मंगल-सदन की ।
रम्भा रमा भारती समेत देवदारैं सबै,
आरती उतारैं श्वेत-सिंधुर-बदन की ।।

मिरचों की महानता

मिरचे कहाते किन्तु किरचें कड़ी हैं तेज,
छेड़ते इन्हें जो मज़ा उनको चखाते हैं ।
तीखे हैं स्वभाव के बड़ेही पर फीके रस,
इनके प्रभाव से अनोखे बन जाते हैं ।।
सीखलो 'दिनेश' ऐ जवानो! आनवान इन–
कड़वे फलों से शान कैसे ये निभाते हैं ।
यौवन बिताते हैं हमेशा हरे होके और,
बूढ़े हो मरे तो लाल-पीले हो बिकाते हैं ।।

× × × × ×

चले जाते हैं

आते धूमधाम से 'दिनेश' हैं मनाते मोद,
मन की मनै में किन्तु ठाने चले जाते हैं ।
योगी यती ध्यानी ब्रह्म-ज्ञानी हू न जानेकहाँ,
कौन से ठिकाने बिना जाने चले जाते हैं ।।
कौतुकी कराल काल-व्याल से न पाते पार,
शूरमा सयाने हार माने चले जाते हैं ।
ताने जौन वैभव-बिताने आसमाने तौन,
ताने एक चादर उताने चले जाते हैं ।।

व्यंगोक्ति

जाने कौन जन्म की 'दिनेश' सुकृती को देख,
विधि ने कपाल-रेख रंचक भली दई ।
कलुष-कमाई सों जुटाय प्रभुताई कछू,
समुद मिटाई म्लान-मुख की मलीनई ।।
जोरी बरजोरी कै अनेक छल-छन्दन सों,
फंदन सों फाँसि पाप-पंक में पली भई ।
सोई हाय सम्पत्ति समूल साथ लैकै सबै,
चाँदनी दिखाय चारि दिन की चली गई ।।

× × × × ×

(२)

मान्यों गुरु ज्ञाति कोन जान्यों जाति-पाँति ही को,
ठान्यो नेह नात सदा भीति मान जाया ते ।
देवी देव पीतर न हेरत तिहारी ओर,
रहत 'दिनेश' दूर तेरी छूत-छाया ते ॥
ऐंठो फिरै तौहूँ तैं बनैठो लै गुमान भरो,
ऐरे मतिमंद ! क्यों मदान्ध भयो माया ते ?
मानव भयो तो कहा ? दाव्रन समान जोपै,
हाया ते बिहीन भयो कोढ़ी भयो काया ते ॥

(३)

लहलही ललाम लहराती लतिकाएँ देख,
दाएँ बाएँ घूर-घूर चक्कर लगाते हैं ।
सौरभ बिखेरता समीर जिस ओर से है,
होकर अधीर उसी ओर मँडराते हैं ॥
मृदु-मकरंद के मनोर्थ में 'दिनेश' व्यस्त,
विभ्रम समस्त चेतना को भूल जाते हैं ।
चीखते विचारे चंचरीक चंचु काढ़े किन्तु,
चम्पक-कली की चीख चाशनी न पाते हैं ॥

× × × × ×

(४)

मलिन बनाए मन तन औ बसन सारे,
दशन निकारे लाज निपट बिसारी है।
द्वार-द्वार दीन व्है पसारत फिरत हाथ,
आरत-पने की हीन-वृत्ति उरधारी है ।।
श्रम कै 'दिनेशजू' कमाय पुरुषारथ सों,
रूख सूख खाय भूख प्यास न निवारी है।
सोचत न हाय रह्यो विरथा नशाय काय–
कंचन कटोरा लिये माँगत भिखारी है ।।

(५)

दाँव है चलाए कलावाज़ी के हज़ारों किन्तु,
हाथ में हमेशा वही काने तीन आए हैं।
ग्रंथ भी छपाए हैं बनाए हैं कवित्त केते,
वित्त भर कोई कर्म छूटने न पाए हैं ।।
गाए प्रेम–गान औ जगाए पंचवान त्योंही,
आभा ओज आनन ते कानन भगाये हैं।
कवि हैं 'दिनेश' हम कितने महान देखो,
देश में हमारी कविता के रंग छाये हैं ।।

× × × × ×

जनक-जिज्ञासा

जानि निज सेवक बताओ मुनिराज मोहिं,
काके युग सुन्दर कुमार संग लायो है।
पेखि सुघराई सुघराई सकुचाय जात,
हेरि मुख-माधुरी मयंक हू लजायो है॥
जाहिदेखि औचक 'दिनेश' मन मोह्यो आज,
अजहूं न मेरो चित्त-चातक अघायो है।
मुनि के कुमार हैं कि भूप सरदार कोऊ,
धरि अवतार याकि पारब्रह्म आयो है॥

नश्वर-देह

काहू की रही है ना रहेगी देह नश्वर ये,
याके राखिबे की चहै जेती युक्ति सोचैंगे।
जाँयगे अकारथ प्रयत्न करि लाख देखौ,
अंत में 'दिनेश' दूत यम के दबोचैंगे॥
तीन गति तामें एक ह्वैकर रहेगी याते,
पारि दे प्रभू की पौरि जासों पाप मोचैंगे।
जारे छार ह्वैहै गाड़े गरिकै हिराय जैहै,
डारे नदी नारे चील कौवा श्वान नोचैंगे॥

× × × × ×

परशुराम

काटि युग बाहु सों सहस्रबाहु कदली सों,
राहु रिपुवों की क्रूरता को कहरा गए।
क्षत्रपति क्षत्रियों के शोधि शोधि रुण्ड मुण्ड,
सप्त कुण्ड श्रोणित के सिन्धु लहरा गए॥
कोपित-कुठार के प्रहार की प्रतिध्वनि से,
नभ में 'दिनेश' घोर घन घहरा गए।
विप्र वंश विमल विभूषण परशुराम,
वीरता की विजय पताका फहरा गए॥

(२)

यद्यपि अनंत के अनंत रूप धारण में,
महिमा अपार है पराक्रम के काम की।
बामन बराह में नृसिंह कच्छ मच्छ हू में,
राम श्याम हू में है महत्ता उसी नाम की॥
देवी देवताओं का बखान करना है व्यर्थ,
अगम 'दिनेश' हैं कथाएँ गुणग्राम की।
तपबल तेज की तुला पै तौलने से किन्तु,
पाई शक्ति जाती है सवाई भृगुराम की॥

× × × × ×

सरदार भगतसिंह की फाँसी पर

देश में चलाके दुष्ट दमन दुशासन को,
फ़र्ज भुगताले सभी क़र्ज की रसीदों का ।
जी भर उड़ाले रे मख़ौल और थोड़े दिन,
चालिस करोड़ मातृभूमि के मुरीदों का ।।
दार पै चढ़ाके सरदार को ख़ुशी के साथ,
हौसला मिटाले ख़ूब आख़िरी उमीदों का ।
देगा भून आख़िर जुनून यह तेरा तुझे,
ख़ून कर देगा ख़ून अमर शहीदों का ।।

उद्बोधन

लाओ क्यों न प्रेम औ मिटाओ क्योंन दम्भ द्वेष,
दीन-बन्धुओं को दौर कण्ठ से लगाओ क्यों न ?
छुआछूत भूत को भगाओ क्यों न वीरो शीघ्र,
प्यारे अंत्यजों को पथ-उन्नति सुझाओ क्यों न?
छाओ क्यों न शांति त्यों छकाओ क्यों न छद्मियों को,
भ्रांतिके विषैले भाव क्रांति से दबाओ क्यों न?
देर क्यों लगाओ ऐ 'दिनेश' डट जाओ क्यों न,
देश को समुन्नति के शिखर चढ़ाओ क्यों न ?

× × × × ×

छायदो सुधा सी शांति करके कराल क्रांति,
सुयश-सुकांति विश्व बीच बगराय दो।
तामस को तायदो बढ़ायदो सुसाहस को,
आलस नशाय जोश जाति में जगाय दो॥
प्रेम सरसाय दो मिटायदो 'दिनेश' द्वेष,
पाठ स्वावलम्ब का स्वदेश को पढ़ाय दो।
ढायदो अधर्म और भगायदो दिलों से भर्म,
धर्म की पताका विश्व बीच फहराय दो॥

× × × × ×

दैकै जन्म जननी ने प्रान के समान पाल्यो,
झेल्यो त्यों अपार कष्ट आसरा लगाय कै।
गोद में सुलायकै पिलाय क्षीर छाती लाय,
प्रेम सों पढ़ाय दियो तरुण बनाय कै॥
भाषत 'दिनेश' तासु क्लेश न निवारे नेकु,
जूझि गये तरुणी के नैन बाण खायकै।
धर्म को नशाय पूत कर्म को विहाय मातु–
कोख को लजाय भूमिभार भए आयकै॥

× × × × ×

द्वैज का चांद

बांध निज पापन सों जनक कुबन्धन में,
तनक विलोकि कंज-पुंजन पचाइगो ।
अम्बर की अमल तरैयन मलीन करि,
दीन-विरहीन तन तापन तचाइगो ॥
दमकि 'दिनेश' कढ़्यो काम की कमान ऐसो,
बुझत प्रदीप के प्रकाश सों बिलाइगो ।
नील नभ-अंक ते निशंक व्है कलंक-केतु,
द्वैज को मयंक-बंक वन्हि बरसाइगो ॥

समस्या—हरतालिका उपासी है

चंद्र की कला सी चपला सी चारु चंचला सी,
नवल वधूटी रूपराशि-अतुला सी है ।
सोहति उमा सी शंभु-भक्ति-अभिलाषी, ईश—
शक्ति-प्रतिमा सी क्षमाशील बसुधा सी है ॥
दीपति दया सी है मया सी है 'दिनेश' मंजु,
कंज-नालिका सी ध्यान मग्न अचला सी है ।
ब्रह्म-बालिका सी पुण्य-पुंज-पालिका सी, दिव्य—
दीप-मालिका सी हरतालिका उपासी है ॥

× × × × ×

कुलाङ्गना

सुंदर स्वरूप वारी, सहज सुरंग वारी,
सरस सनेह वारी, गेह शुचि-कारी है ।
प्रीतम की प्रीति वारी, परम प्रतीति वारी,
प्रणय पुनीत वारी, नीति अनुहारी है ॥
तैसई 'दिनेश' मृदु मंद मुसकान वारी,
मंजुल मजेज वारी, मान मुद कारी है ।
विमल विबेक वारी, विनय विनोद वारी,
सलज सुशील वारी, श्रेष्ठ कुल-नारी है ॥

वैवाहिक प्रशस्ति (वर पक्ष)

पूर्वजों की परम पुनीत प्रतिभा के पुंज,
पुण्य के प्रताप के प्रतीक हैं प्रमान हैं ।
विद्या बुद्धि विनय विबेक बंश वैभव में,
विदित वसुंधरा में विधु के समान हैं ॥
शिक्षा सदाचार में 'दिनेश' शील सभ्यता में,
सुजन समाज में प्रतिष्ठित प्रधान हैं ।
वक्ष से लगाके आज आपको सप्रेम हम,
सहित बरात के प्रफुल्लित महान हैं ॥

× × × × ×

सवैया (संसार)

संसृति क्यों न असत्य ही हो,
पर दृष्टि में सत्य ही दीख रही है ।
चाहे असार हो सारा पसार पै,
सार का मूर्त-प्रकार वही है ॥
नित्य हो या कि अनित्य 'दिनेश'
परन्तु समस्त प्रपंच सही है ।
भासता है असतित्व इसी से,
अरूप का एक स्वरूप यही है ॥

× × × × ×

ताना प्रपंच का ताना गया,
गया बीना विशुद्ध-विकार का बाना।
राग विराग के रंग से रंजित,
वस्त्र 'दिनेश' बने विधि-नाना ॥
यों पट मंडित विश्व-निकेतन में,
हुआ चेतन का टिक जाना ।
भेद किसी ने न जाना कभी अरु,
जाना किसी ने न जाना न आना ॥

× × × × ×

जीवन मृत्यु के योग ही से,
जग नाम पड़ा, सबने जब माना ।
नित्य अनित्य निरूपण का तब,
व्यर्थ है वाद विवाद बढ़ाना ।।
सत्य है क्या ? क्या असत्य ? 'दिनेश',
न सिद्ध हुआ न गया पहिचाना ।
काल औ कर्म के कौतुक से,
बस जन्म हुआ औ हुआ मर जाना ।।

देबि-दरबार

दानि शिरोमनि जानि कैं तोहिं,
जुरे जन पूजन हेत स-वाला ।
भक्त अभक्त सपूत कपूत,
यती अवधूत लवार औ लाला ।।
द्वार पै बोलि 'दिनेश' रहे जय,
खोलिदे मातु भँडार को ताला ।
देरही तौ हूँ अधीर बने, कर–
माला लिए कहते अरी माँ ! ला ।।

× × × × ×

संध्या

स्वागत हेतु समोद दिगांगना,
श्यामल साज सजावन लागीं ।
पादप-पुंजन कुंजन में,
चिरियाँ चुंहुंकार मचावन लागीं ।।
नील-वितान तना नभ में,
नव-तारिका ज्योति जगावन लागीं ।
झांझ मृदंग बजाय 'दिनेश',
सुहागिनी साँझ मनावन लागीं ।।

रजनी

अभिसार अनूप 'दिनेश' किए,
रति-रूप को मान लजाय रही है ।
सुख नींद सुलाय सँयोगिन को,
विरहीन पै बान चलाय रही है ।।
पिय के मृदु हास विलासन सों,
रसकेलि अकेलि मचाय रही है ।
रजनी-सजनी निज साजन साथ,
सुहाग की रात मनाय रही है ।।

× × × × ×

गंगा

पाप औ ताप सबै हरिगे,
ऐ जटाटवी ! तेरी तरंग निहारे ।
कोटिन त्यों अधमाधम हू,
गुन गाय सुखी सुरधाम सिधारे ।।
ऐसो 'दिनेश' चरित्र विलोकि,
भगे भय सों यमदूत बिचारे ।
नारे सुने तिनके घबराय,
छिपे यमराय हू मूंद किवाँरे ।।

वैवाहिक-प्रशस्ति

आपको पाकर धन्य हुए हम,
ऐसे सुशील सुजान मिले हो ।
चाहना और नहीं कुछ भी,
सबसे हमें आप महान मिले हो ।।
नेह का नात निबाहनें को,
सब भांति समर्थ समान मिले हो ।
भाग्य बली है हमारा बड़ा,
सुख भोगने को भगवान मिले हो ।।

× × × × ×

शिवपुरी (गर्गाश्रम) की साधु कुटी

शंकर के शरणागत में, शुचि–
साधक के कर की लकुटी है ।
पादप–पुंजन पुष्प–निकुंजन,
सों सुषमा विभु की प्र-जुटी है ।।
गंग तरंग सु-नीर समीर सों,
पूरित पीर हरै को बुटी है ।
साधु शिरोमणि आश्रम-कृष्ण की,
शांतिमयी यह सिद्ध–कुटी है ।।

व्यंग

आपको क्या मैं सुनाऊं कहो ?
कवि हूं नहीं और न गीत-गवैया ।
काव्य-कला तो बला होगई,
बदला कुछ ऐसा अजीब रवैया ।।
फोन पै बाजे तवा जितने,
उनपै क्या 'दिनेश' बजाऊं तवैया ।
ध्यान से कौन सुनेगा यहां पर,
बैठ के मेरे कवित्त सवैया !

× × × × ×

अपनी स्थिति

स्वर्ग सिधार गई सहधर्मिणी,
भीर-समै की सुधीर सहावल ।
संतति भी अपने अवलम्ब से,
है सुखी शांत न कोई उतावल ।।
वासना बीत गई सब बात की,
श्वेत हुए सिगरे कच–साँवल ।
साँसति लेश न शेष रही,
अबतो है 'दिनेश' खरा छरा-चावल ।।

× × × × ×

दीन का खून जो होता नहीं,
तो अमीर कभी खुशहाल न होता ।
ऊंचा पहाड़ न होता कभी,
जो धरातल का कटा ढाल न होता ।।
काल न होता 'दिनेश' कभी बली,
जो जग का वह काल न होता ।
लाल न होता कभी नभ, जो,
दिनरात का रोज़ हलाल न होता ।।

× × × × ×

तुलसी

जीवै दियो झुलसाय जबै भव–
तापन पापन की झुलसी ने ।
धर्म पै धाय प्रहार कियो जब,
काल की कूर कड़ी कुलशी ने ॥
छायो महा अँधियार जबै,
सुत जायो 'दिनेश' तबै हुलसी ने ।
राम कथामृत पान कराय,
जियाय लियो जग को तुलसी ने ॥

(२)

छाय सुकीर्ति रही जग में अरु,
मानुख–मानुख में तुलसी की ।
जापि रहे जन, माल लिए कर,
आपति में दुख में तुलसी की ॥
पान पियूष 'दिनेश' रहे करि,
मानस सों सुख में तुलसी की ।
जाय रहे सुरधाम को पातकी,
पाती धरे मुख में तुलसी की ॥

× × × × ×

(३)

तोरि दिए यम-फाँस सबै, मुख-
काल के कालिख मेलि मसी की ।
जीवनमूरि रसायन सों, मुरझानी-
लता हिय की हुलसी की ।।
साहिति-व्योम 'दिनेश' उदै करि,
नागरि अंग छटा की शशी की ।
जौलौं रहैं तन प्रान, अरी छवि !
प्यारी रहै तु-लसी तुलसी की ।।

पैसा

कोसते हैं जो वृथा हक नाहक,
जानते हैं नहीं, है वह कैसा ।
माल उसी की जपैं वह भी दिन-
रात, कहैते लगैगो अनैसा ।।
कौन है ऐसा 'दिनेश' कहो ? जो-
करादे तुरंत, चहो जब जैसा ।
काम सँभालता है सब काल में,
राम से ज्यादा हराम का पैसा ।।

× × × × ×

(२)

कन्याकुमारी कहां कहां कामरू ?
है कशमीर कहां पर कैसा ?
देख न पाते विदेश 'दिनेश',
अमेरिका रूस में हो रहा जैसा !!
होता न भोग विलास का राज,
न साज सिंगार समाज ही ऐसा ।
भेंट न होती विभूतियों से कभी,
होता नहीं यदि टेंट में पैसा ॥

(३)

अर्थ अनर्थ न देखता है, अल–
मस्त बड़ा सरदार है पैसा ।
मानव दानव देव 'दिनेश'
किए सब पै अधिकार है पैसा ॥
भौतिक जीवन की करनी--
तरनी का बना पतवार है पैसा ।
है पति राखन हार सदा यह,
श्रीपति का अवतार है पैसा ॥

× × × × ×

(४)

योगी यती सती सत्यब्रती से,
विरक्त हो देता नजात है पैसा ।
होता जहां अनुरक्त ग़रीब पै,
देता कलेश निपात है पैसा ।।
या दुनियां में 'दिनेश' सभी के,
निबाहता नेह औ नात है पैसा ।
होगा कभी कुछ भी पर, आज तो–
भ्रात है मात है तात है पैसा ।।

(५)

आता चला इस ओर से है, उस–
ओर को जाता चला यह पैसा ।
साथ पटाता किसी का भला त्यों,
कटाता किसी का गला यह पैसा ।।
नाच के नाच नखों पै 'दिनेश',
दिखाता अनेक कला यह पैसा ।
लाड़ला है लछिमी का लला,
दुनियां में अजीब बला यह पैसा ।।

× × × × ×

हास्य-व्यंग

प्यार को जो पहिचानता तो, बन–
पागल यों गुमराह न होता ।
रोता नहीं तक़दीर पै यों, गर–
देता तुम्हें इसलाह न होता ।।
पाता पनाह जो और कहीं तो,
'दिनेश' यों भूल गुनाह न होता ।
होता तबाह न यों कभी जो,
तुमसे बड़ी बीबी निकाह न होता ।।

व्याज स्तुति

जो जिस तौर से जैसा मिला उसे,
वैसा सकार के ग़ौर से देखा ।
मान के आन तुम्हारी सदा,
विविधान में एक तुम्हीं को विशेखा ।।
दोष 'दिनेशजू' पूछते हो, किसका–
है ? विलोक कुकर्म का लेखा ।
देख न लो, किसकी है लिखी यह?
कोरे कपाल पै भाग्य की रेखा ।।

× × × × ×

घनश्याम

रंग न और चढ़े जिसपै, उस–
रंग में डूब ललाम हुए तुम ।
व्योम औ वारिधि की सुषमा,
उपमा के लिए छविधाम हुए तुम ।।
नील-छटा की घटा में 'दिनेश'
विभोर हो पूरन-काम हुए तुम ।
श्यामला-शस्य हुई वसुधा, घन–
श्याम हुए घनश्याम हुये तुम ।।

जीवन

संसृति के सुख संकट को सम,
मान निबाहना जीवन है ।
प्रेम प्रतीति-पयोनिधि में धँस–
के अवगाहना जीवन है ।।
मित्र अ-मित्र सभी के 'दिनेश',
गुणों को सराहना जीवन है ।
चाहना और उमाहना में,
बिकना औ बिसाहना जीवन है ।।

× × × × ×

(२)

अवनी पर क्रन्दन के ही लिए,
जननी ने नहीं हमको जना है ।
करके कुछ जाना यहाँ है 'दिनेश'
बनाना यही परि–योजना है ॥
पथ का तम-तोम हटे इस हेतु,
प्रकाश का दीप सँयोजना है ।
अपना इन्हीं धूलि-कणों में छिपा,
बिखरा हुआ जीवन खोजना है ॥

समस्या:—बिन छाल की सूखी बढ़ी लकड़ी ।

घर में पड़ी आम की काम की थी,
बहती हुई बाढ़ में थी पकड़ी ।
बनवाई किवार की जोड़ी 'दिनेश',
बड़ी मजबूत जड़ी जकड़ी ॥
युग-अंगुल की परि ड्योढ़ गई,
कहीं ऐंठ गई त्यों कहीं अकड़ी ।
बरसात की बारि बयारि लगे,
बिन छाल की सूखी बढ़ी लकड़ी ॥

× × × × ×

समस्या:—बिन शीश जटा फटकारत आवै ।

अंग में राख लगावै घनी, अध–
नंग व्है भूत को रूप बनावै ।
धावै धरा पै इतै उतै नित्य,
लिए डमरू तिरशूल दिखावै ॥
लावै न ध्यान 'दिनेश' महेश को,
केवल केश–कलाप बढ़ावै ।
पावै न ज्ञान की भीख गुरू बिन–
शीश जटा फटकारत आवै ॥

विवश देह

अनबोल है, मोल ही क्या इसका ?
जिस भांति चहै उपयोग करो ।
इनकार नहीं किसी बात में है,
प्रतिपाल करो चहै छाल छरो ॥
तुम्हरे बश देह 'दिनेश' सदा,
चहै नाश करो चहे त्रास हरो ।
मटुकी यह मृत्तिका की इसमें,
लै पुरीष भरो या पियूष भरो ॥

दोहे

गौरी गोद गणेश मुख, चूमत हँसत महेश ।
झूमत धँसत सनेह-निधि, बिसरे विरति 'दिनेश' ।।

निर्गुन तजि सगुनहि भजौ, जो फल चाहत मीत ।
वारि विलोये कछु नहीं, दूध मथे नवनीत ।।

श्रवण परे हरि की कथा, पाप ताप हरि जात ।
ज्यों बरषा की बूंद सों, है जवास जरि जात ।।

वाहू को दुख हरि हरैं, सकुचि जात जो पास ।
दीन सुदामा को कियो, जैसे दारिद नाश ।।

पूजन अर्चन हेतु बहु, मंदिर बने विशेष ।
हृद-मन्दिर में ही मिलैं, दरशन किन्तु 'दिनेश' ।।

"तमसो मा ज्योतिर्गमय", विनवत बारम्बार ।
पै चितवत ही ज्योति में, देखि परत संसार ।।

हैं प्रकाश में दीसते, प्रकृति–प्रपंच अनेक ।
अंधकार में सूझता, केवल आपुइ एक ।।

जप तप तीरथ दान व्रत, कीजै विविध प्रकार ।
सुगति कुगति पै जीव को, मिलै भगति अनुसार ।।

वाँचे वेद पुरान बहु, पण्डित बने महान ।
व्यर्थ ज्ञान सब, आपको–जो न सके पहिचान ।।
जीव रह्यो जब, जीभ सों, कढ़्यो न कबहूं ओम् ।
हाड़ माँस धरि चिता पर, करन चले अव होम ।।
सबै कहत अरु सत्य है, निर्बल के बल राम ।
पै हरिहू हेरत नहीं, वैठे बने निकाम ।।
पाँच तत्व की पालकी, चार पदारथ साथ ।
लुट्यो बटोही बीच ही, लाग्यो कछू न हाथ ।।
विरिया बीती युगन की, चिरिया करत अपार ।
मिटी न लीक लिलार की, किरिया के अनुसार ।।
तुमही कहते धरम है, परम दीन उपकार ।
तौ, कस खुद अधरम करत? दुखियन भूखन मार ।।
खड़े बजावत ढोल नट, नटी करति है खेल ।
या जग का अभिनय सभी, प्रकृति पुरुष का मेल ।।
धन जन तन यौवन जरा, सुख दुख बारम्बार ।
आवत जात रहैं सदा, करो न सोच विचार ।।
देख न ले तू फूल को, मिला फूल के धूल ।
सुख का सपना देख के, दुख अपना मत भूल ।।

अपना गनि, जोरैं भले, पूंजी औ पन्सार ।
अंत भए अपना नहीं, सपना है संसार ।।
तीन अंग तन के करैं, विचलित मन का ध्यान ।
कुशल चहौ, मूंदे रहौ, आनन लोचन कान ।।
दुष्टन के मुख दशन बिच, बसी जीभ विलखाय ।
कसी कसाई खूंट में, जैसे कपिला गाय ।।
खल निवास में बास करि, साधु कुटिल व्है जाय ।
अमिय गरल व्है जात है, अहि के उदर समाय ।।
खल पावै सुख साधु दुख, विधि की उलटी चाल ।
रावण लंकापति भयो, बलि बँधि गयो पताल ।।
अपने तप से शिष्य के, मेटत गुरू कलेश ।
ज्यों शशि को निज ताप से, शीतल करै दिनेश ।।
पौरुष ते जुरि जात हैं, सुत वनिता धन धाम ।
पै, या तनको ना मिलै, विना राम आराम ।।
हित की सिख विष सी लगै, मन मँह भए विषाद ।
फीको लगै पियूष हू, बिगरे जीभ सवाद ।।
कौन कितो मम हितू है, करि देखहु यह फाँट ।
वाके मन को तौलिये, अपने मन के बाँट ।।

औरन की विपदा लखे, विरले को दुख होय ।
पै अपने ऊपर परे, रोय देत सब कोय ।।
भलो वहै वाके तईं, जाको जौन सुहात ।
मोती चुनत मराल है, आग चकोर चबात ।।
दुर्जनहू आदर दिए, होंय सहाय जरूर ।
ज्यों तरु की रक्षा करैं, रूँधे बेर बबूर ।।
बालक ब्रह्म स्वरूप हैं, जानत मन की बात ।
अप्रिय भाव जाको लखैं, ताकी गोद न जात ।।
शक्ति स्वरूपा बालिका, माया परम अनूप ।
सबके मन मोहित करैं, धरे मोहनी रूप ।।
सुन्यों बहुत, देख्यों नहीं, धारचों इतनी देह ।
काहू सों छूटत नहीं, देहरी मेहरी नेह ।।
शंकर ब्रह्मा विष्णु अरु, दानव देव अनंग ।
निज-निज बासन में बसैं, किए नारि अरधंग ।।
ससुर गेह में देखिकै, बिनु श्रम अमित सुपास ।
विष्णु पयोनिधि में वसे, शिव बैठे कैलाश ।।
मेहरी की महिमा बढ़ै, नत होवै पति-भाल ।
बूड़ै वैभव बंश को, जाय वसे ससुराल ।।

जाति-पाँति के होयँ नहिं, आय समावैं आँत ।
किट-किट नित नाधे रहैं, जैसे नकली दाँत ॥
पेट पैठि बैरी निवल, सबलहिं देत पछार ।
कीरी घुसिकै शुण्ड में, कुंजर देवै मार ॥
पैर बढ़ाओ देख के, ऊँच नीच गौं-घात ।
या दुनियां शतरंज है, चाल चूकतै मात ॥
समुझै अर्थ न भाव रस, ताहि कवित्त सुनाय ।
करै व्यर्थ श्रम, भैंस के, आगे बीन बजाय ॥
शिक्षित सुजन समाज में, सुकवि लहैं सनमान ।
अरु मूढ़न के होत हैं, राँड़ भाँड़ महिमान ॥
स्वाधीनता सरस्वती, शांति स्वास्थ्य सम्मान ।
सुमुखी सुत सुषमा सुयश, सम्पति चहत जहान ॥
जल-थल बाँधत रचत बम, बिजली और विमान ।
पार न पावत प्रकृति सों, हरि इच्छा बलवान ॥
क़ानूनन अपराध है, छूआछूत विचार ।
इससे ज्यादा और क्या, करें समाज सुधार ?
सहस़बाहु के सहस कर, प्रगटे त्रेता माँहि ।
तेई कलयुग के विषे, सरकारी कर आँहि ॥

मातु पिता परिवार सब, झेलत विपति महान ।
आप बने नेता फिरैं, करैं लोक-कल्यान ॥
कटि-कमान को तान के, लकुटी-शर सन्धान ।
काल बली सों करत रन, ये बूढ़े बलवान ॥
सुमन हार लेकर गई, पहिरायो हिय हार ।
हार गई सरबस, सुछवि, बरवस रही निहार ॥
वेणी-ब्याली भूलि कहुं, प्रियतम अंग डसैन ।
याही ते भरि लेत हैं, अमृत आँसू नैन ॥
वृथा बड़ाई करत जग, इनकी कहि मृदुबैन ।
नाम प्रकट बतला रहा, नैनों में कछु नँ–न ॥
सहज लजीले कस कहैं, जबकि कसीले काम ।
लोच-नहीं से सिद्ध है, जस गुण है तस नाम ॥
बैठैं आसन मारिकै, निरखैं नारी गात ।
भक्तराज नित प्रात उठि, गंग नहाने जात ॥
फिरैं सिपाही शूरमां, बांधे पेटी फेंट ।
चोर शाह पीछे लखैं, पहिले टोवैं टेंट ॥
खुले शीश सीने तने, झीने पट-परिधान ।
करवा देते सहज ही, बहुतों से पहिचान ॥

विटप-बंश ते टूट कर, पर छलियों कर भूल ।
गलियों में बिकते फिरैं, कलियों के ये फूल ।।
नारी शिक्षा कर रहीं, उन्नति रोज़ बरोज़ ।
सड़कन पर बिकसन लगे, सम्पुट बँधे सरोज ।।
सिने-हाल में बैठ कर, दरदे-दिल बेहाल ।
परदे पर हैं देखते, परदे का सब हाल ।।
गाहक आते, देखते, लेते नक़द उधार ।
बनियां धनियां बेचते, बैठे बीच बजार ।।
बड़े बली हैं, शेर हैं, रहे गली हैं घेर ।
पर है असली फेर यह, हैं अपनी से जेर ।।
घर घर नारी होति है, बन बन नारा होय ।
नारी नारा देखि कै, पैर धरत सब कोय ।।
विधि ने काह विचार के, लीन्ह्यो अयश अपार ।
कीन्ह्यों तन सुकुमार अरु, दीन्ह्यों छाती भार ।।
सोडा साबुन तेल मल, क्या तन रहा निखार ?
करके अच्छे आचरन, मन का मैल निकार ।।

शान्ति-स्वस्ति-वाचन

❋ शारदा-स्तवन ❋

सारी-श्वेत धारी अंग, आनन-उज्यारी शुभ्र,
शोभा मनोहारी पूर्ण-शशि की सराहनी ।
वीणा पाणि वारी, मंजु-प्रतिभा सँवारी सदा,
दोष-दुख-हारी पुंज-पातक विदाहनी ॥
वेदन प्रमानी ब्रह्म विरद बखानी महा-
मोद बरदानी उर-अन्तर उमाहनी ।
सौरभ समानी त्यों 'दिनेश' रस-सानी मेरी-
वानी में विराजै मातु बानी हंस-वाहनी ॥

॥ ओ३म् शमस्तु समाप्त ॥